मासिक, दिसंबर 2018 वर्ष 7, अंक 9 ₹50

फेम इंडिया

युवा

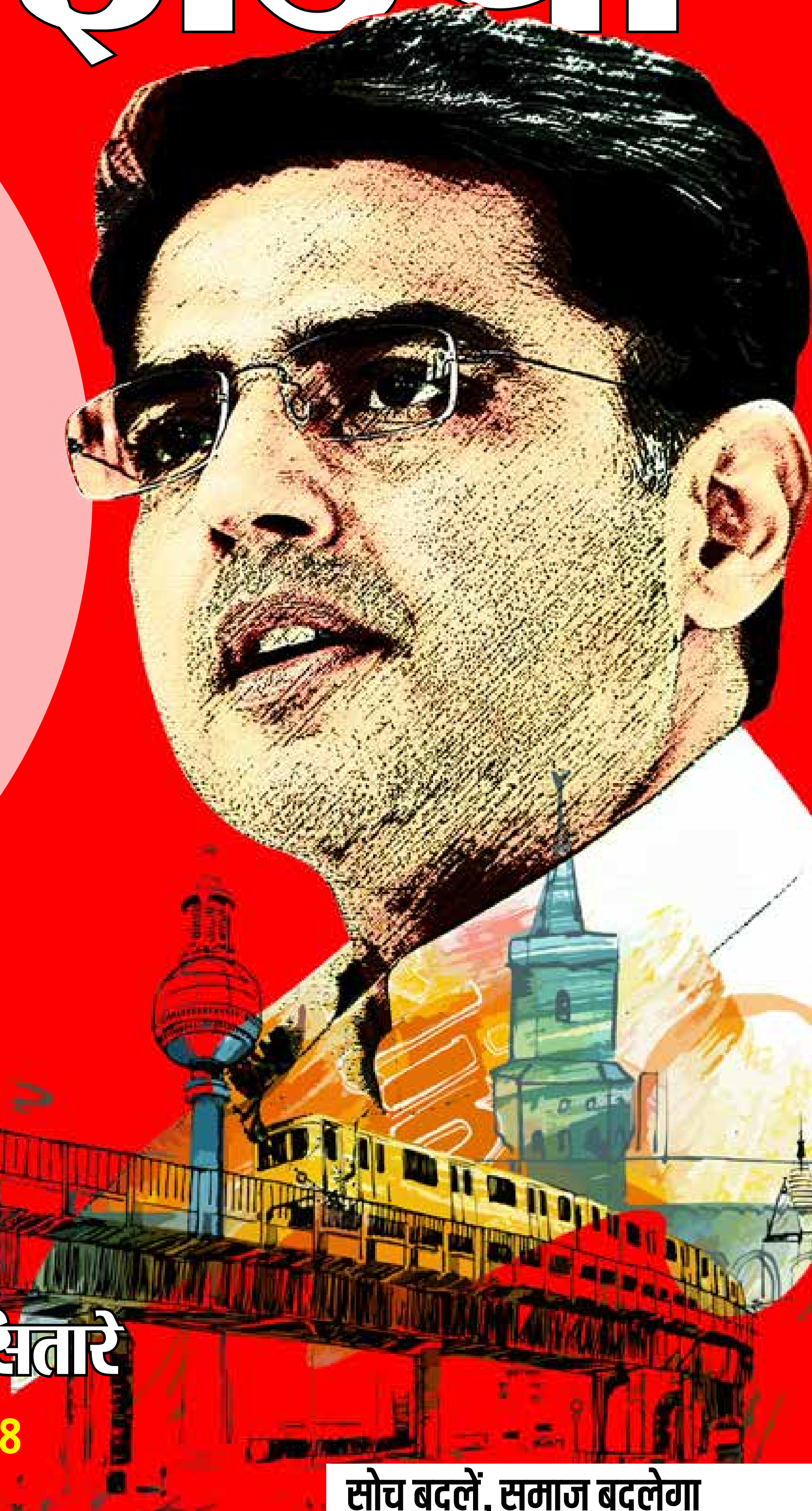

40@40

राजनीति के उज्ज्वल सितारे

एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे 2018

सोच बदलें, समाज बदलेगा

Five Decades
of Engineering Excellence

EIL
A Navratna Company

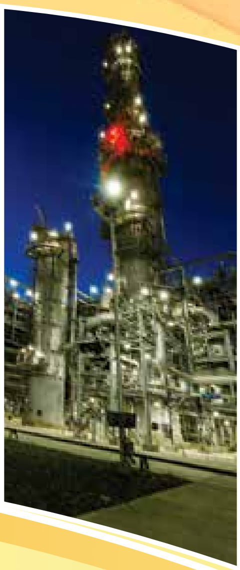

REDEFINING INDIA'S ENERGY LANDSCAPE

For over five decades, EIL has played a pivotal role in engineering the nation's energy blueprint with the execution of world-scale grassroot refineries, state-of-the-art petrochemical complexes, pipelines and a host of critical hydrocarbon projects. We leverage superior project management skills, innovative construction strategies and a highly experienced workforce to deliver these mega projects from concept to commissioning.

- Significant track record including 72 refineries, 43 oil & gas processing plants, 213 offshore platforms, 46 pipelines and 11 petrochemical complexes.
- Diversification into synergic sectors like Fertilizers, Non-ferrous Metallurgy, Infrastructure, Underground Crude Oil Storages, Nuclear & Solar Energy and E&P.
- Over 2,400 highly experienced professionals and technical workforce.
- In-house and collaborative R&D capabilities with 18 registered patents.
- Expanding global presence in Middle East, North Africa and South East Asia.

ENGINEERS INDIA LIMITED

Design | Engineering | Technology | Project Management | EPC

Follow us : www.engineersindia.com /EngineersIND @EngineersIND /company/engineers-india-limited

फेम इंडिया
www.fameindia.co
वर्ष 7, अंक 9, दिसंबर 2018

एडिटर	–	राज श्री
एडिटोरियल डायरेक्टर	–	उमाशंकर सोंथालिया
सीईओ	–	राघवेश अस्थाना
सीओओ	–	शंकर सोंथालिया
मैनेजिंग एडिटर	–	श्वेता श्री
एसोसिएट एडिटर	–	धीरज कुमार
नेशनल ब्यूरो हेड	–	दीपाली श्रीवास्तव
रेजिडेंट एडिटर	–	डॉ विष्णु रजगढिया
आर्ट डायरेक्टर	–	स्वर्ण लता

एडिटोरियल टीम –
शत्रुघ्न प्रसाद
सुधा उपाध्याय
आनंद वर्मा
हेमंत सिंह
मिथिलेश पाठक
अंजू राजपूत
मनजीत सिंह
नंदन झा

सेल्स	–	नीतू चौधरी
मार्केटिंग	–	पंकज तिवारी
सर्कुलेशन	–	प्रवीण मिश्रा
वेब टीम	–	रश्मि सिंह
फोटो रिसर्चर	–	राजेश वर्मा
लीगल एडवाइजर	–	शरद चंद्र झा

(स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजश्री द्वारा ज्योति प्रिंटर्स, ई-94, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर से मुद्रित एवं ए-533, जीडी कालोनी, मयूर विहार फेज-3, दिल्ली से प्रकाशित, संपादक - राज श्री)

संपादकीय एवं मार्केटिंग ऑफिस
फेम इंडिया पब्लिकेशन प्रा। लि।
762,ब्लाक-एफ 8, सेक्टर-50, नोएडा 201304 (उ।प्र।)
फोन नं।- +91-7004450124
ई मेल: info@fameindia।co

RNI No. DELHIN/2012/48773

युवा राजनीति के उज्जवल सितारे

आचार्य चाणक्य का कथन है, 'राजनीति में योग्य लोगों की भागीदारी नहीं होने पर अयोग्य उन पर शासन करने लगते हैं।' यह कथन वर्षों पूर्व से योग्य युवाओं के सक्रिय राजनीतिक भागीदारी की जरूरत को समझने के लिये पर्याप्त है। अधिकतर लोगों का मानना है कि राजनीति उस काजल की कोठरी के जैसी हो चुकी है जिसके लिए कहा जाता है, 'काजल की कोठरी में कैसे ही सयाने जायें, एक लिक काजल की लागी है... इससे दूर ही रहना।" यह सच है कि आज की राजनीति उस मुकाम पर पहुंच गयी है कि कोई ईमानदार आदमी भी देश सेवा के इरादे से इसमें आना चाहे तो बेदाग नहीं निकल सकता। लोग कहते हैं कि अब भारत की राजनीति में फिर कोई गांधी, पटेल, नेहरू या शास्त्री नहीं आएगें। लेकिन शायद ये उस दौर की बात थी जब भारतीय लोकतंत्र संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। अब नया सूरज निकल रहा है एक नयी पीढ़ी के साथ। इस पीढ़ी में कुछ कर गुजरने का जज्बा है। अब तक के प्रमुख नेता जिनमें नरेंद्र मोदी, मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी, ए के एंटोनी, शिबू सोरन, शिवराज सिंह चौहान, मोती लाल बोरा, नीतीश कुमार, लालू यादव, नवीन पटनायक, चंद्राबाबू नायडू, शरद पवार जैसे दिग्गजों के नाम शामिल है के अलावे युवा पीढ़ी अपने लिये नये यूथ आइकॉन यानी उज्जवल सितारें उभरते नये नेतृत्व के तौर पर आदर्श खोजने को भी तत्पर है। युवाओं के लिये परिवारवाद, जातिवाद, संप्रदायवाद आदि धीरे-धीरे मुद्दे नहीं रहेंगे, ऐसा आभास होने लगा है। विकासवादी सोच किसी सहारे को मोहताज नहीं।

फेम इंडिया-एशिया पोस्ट ने इस बार अपने सर्वे में देश की राजनीति से ऐसे ही 40 वर्ष तक के युवा राजनेताओं के कंधों की मजबूती को परखा है जो जनता के भविष्य की जिम्मेदारी लेने को तैयार हैं।

इस सर्वे में हमने 40 वर्ष तक के 40 युवा राजनेताओं को उनकी योग्यता, दूरदर्शिता, अनुभव, छवि और लोकप्रियता आदि बिन्दुओं को पैमाना बना किये गये सर्वे का आकलंन किया है तथा देश के सभी भागों में बसे हजारों देशवासियों की राय पर करीब 300 चुनिंदा चेहरों में से चोटी की 40 शख्सियतों को इस पत्रिका में स्थान दिया है। आइये जानते हैं, हमारा कल किसके हाथों में है।

"चल पड़े जिधर दो पग डगमग, चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गयी जिधर भी एक दृष्टि, गड़ गये कोटि दृग उसी ओर।"

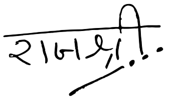

info@fameindia.co

युवा ही संभाले युवाओं का देश

भारत विश्व का सबसे युवा देश है, लगभग 70 प्रतिशत से ज्यादा की संख्या 40 वर्ष से कम उम्रवाले युवाओं की है ।एक युवा हीं युवा की समस्या और मानसिकता को अच्छी तरहसे समझ सकता है, इसलिए युवाओं की राजनैतिक भागीदारी बढे ऐसे प्रयास तो होते ही रहने चाहिए ।

एक नेता वह व्यक्ति होता है जो हमें बताता है कि क्या संभव है और भविष्य की रूपरेखा तैयार करने का साहस और दूरदर्शिता भी उसमें होती है। युवा आम तौर पर जुनून, ऊर्जा और वचनबद्धता के गुणों से भरे होते हैं और यही एक अच्छे नेता बनने की पहली शर्त भी है ।

एक अच्छे युवा नेता की पहली जरूरत,आत्मविश्वास की है, लेकिन अतिआत्मविश्वास अहंकार में परिवर्तित न हो इसके लिए सजग और सावधान रहने की आवश्यकता भी है। दृढ़ विश्वास के साथ अपनी बात रखने की कला और विषय की गहरी जानकारी एक सफल युवा नेता के लिए बेहद जरूरी है ।

युवा नेताओं को सकारात्मक मनःस्थिति के साथ काम करना चाहिए क्योंकि जब हम दूसरों के बारे में नकारात्मक बात करने की आदत बना लेते हैं, तो यह हमारी नेतृत्व करने की क्षमता पर सवाल खड़े करता है ।हमें यह नहीं भूलना चाहिए की सफलता और सकारात्मक दृष्टिकोण के बीच एक सीधा संबंध है ।

इन्ही सब बातों को सामने रखकर हमने पुरे भारत वर्ष के सभी युवा नेताओं को उनकी योग्यता, अनुभव, दूरदर्शिता, सक्रियता, जनता से जुड़ाव, प्रभाव, संवाद क्षमता, छवि, नेतृत्व क्षमता और लोकप्रियता के आधार पर उनको चुना और आज हम यहां प्रकाशित कर रहें हैं। इन्हे मैं साधुवाद देता हूँ और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ ।

राजीव मिश्र
एडिटर-इन-चीफ
एशिया पोस्ट

बदलाव के पथिक

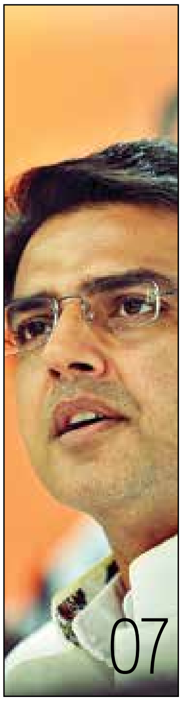
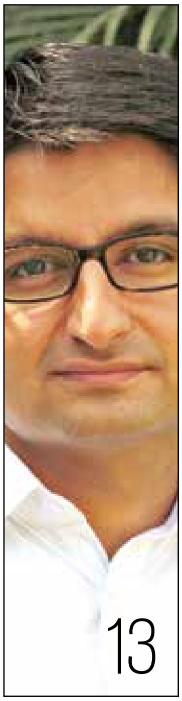

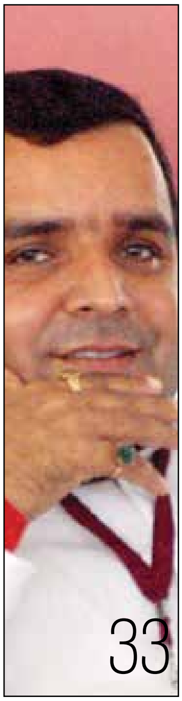

07 **सचिन पायलट**
नया करने की ललक ने बनाया खास चेहरा

13 **दीपेंद्र सिंह हुड्डा**
आसमां छूने का हौसला

17 **जिग्नेश मेवाणी**
संघर्ष से सामर्थ्य का विकास करते

33 **धर्मेंद्र यादव**
गरीबों की मदद ही राजनीति का मुख्य लक्ष्य

40 **सावित्री ठाकुर**
जनसरोकार के कार्य के लिए प्रसिद्ध

45 **जयवर्धन सिंह**
युवाओं को तरक्की से जोड़ने को प्रयासरत

14 **प्रवेश वर्मा**
सहज सुलभ युवा राजनेता

21 **प्रशांत किशोर**
बेहतरीन रणनितीकार

38 **अनुपम हाजरा**
सियासत की पिच पर जौहर दिखाते

युवा राजनीति के उज्जवल सितारे

पिछले 10-15 सालों में भारत के युवाओं में सकारात्मक परिवर्तन की सुखद बयार आयी है। भारतीय जनतंत्र ने पिछले कुछ वर्षों के दौरान विश्व भर में अपनी सशक्त भूमिका दर्ज की है। इसका पूरा श्रेय भारत के उन युवाओं को जाता है जिनकी सोच में देश की राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था को लेकर क्रांतिकारी बदलाव आया है। जब युवा राजनीति की बात उठती है तो परिसर यानी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के चुनावों का जिक्र भी ज़रूरी है। जिस तरह से परिसर मे दलीय राजनीति अपना रंग दिखाने लगी है इससे यह बात साफ हो चली है कि राजनीतिक दल युवाओं में भविष्य तलाशना चाहते हैं। हालाँकि ये एक बहस का मुद्दा हो सकता है कि परिसर की राजनीति संसद या विधानसभाओं को मद्देनजर चलायी जानी चाहिये या सिर्फ छात्रों द्वारा परिसर के लिये? क्योंकि इन दो अलग-अलग उदेश्यों के लिये भिन्न राजनीतिक चरित्र का होना जरूरी है, लेकिन यह भी सच है कि परिसर युवा वर्ग को राजनीति सीखना व समझने का भी मौका प्रदान करता है।

ऐसा नहीं कि छात्र व युवा राजनीति में संभावनाओं का आकाश बहुत सीमित है ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जिन्होंने आगे चल कर राष्ट्रीय राजनीति मे महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन छात्र जीवन मे उन्हें किसी राजनैतिक दल की छ्तरी की आवश्यकता महसूस नही हुई।

हाल के वर्षों में भारतीय युवाओं के खास अंदाज ने विश्व के दिग्गजों का ध्यान आकर्षित किया है। राजनीति में न सिर्फ सभ्य, सुशिक्षित और समझदार नौजवानों का पदार्पण हुआ है बल्कि इनकी दूरदर्शिता और सूझ-बूझ पर बड़ी-बड़ी राजनीतिक पार्टियां भी अपना दांव खेल रही हैं।

संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं, स्थानीय निकाय हों या ग्राम पंचायत, हर जगह युवा किसी भी राजनीतिक दल के बैनर तले अपनी नयी सोच व नये विचारों के साथ आगे आ रहे हैं।

फेम इंडिया ने एशिया पोस्ट के साथ मिलकर ऐसे 40 शीर्षस्थ युवाओं को खोज निकाला है जो 40 वर्ष से कम उम्र में ही राजनीति की ऊँचाइयां छू चुके हैं और एक नया मानदंड स्थापित कर रहे हैं।

प्रभावशाली

सचिन पायलट

नया करने की ललक ने बनाया खास चेहरा

सचिन पायलट देश के प्रभावशाली युवा नेता हैं। फिलवक्त ये राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हैं। इन्होने अपनी स्कूली शिक्षा नई दिल्ली के एयर फ़ोर्स बाल भारती स्कूल से तथा नई दिल्ली के ही सेंट स्टीफ़ेंस कॉलेज से स्नातक किया। कॉलेज के बाद इन्होंने बीबीसी के दिल्ली ब्यूरो और जनरल मोटर्स में काम किया। फिर ये अमेरिका चले गये और अमेरिका की पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय के व्हार्टन स्कूल से एमबीए की पढ़ाई कर रहे थे तभी दिग्गज राजनेता पिता राजेश पायलट की दुर्घटना में मृत्यु हो गयी।

पढ़ाई के बाद अच्छी-खासी मोटी तनख्वाह पर अमेरिका में ही जॉब मिल जाती लेकिन पिता से करार था कि पढ़ाई के बाद भारत वापस आना है। बेटे ने दिवंगत पिता से किया अपना वादा निभाया। भारत वापस आकर पिता के नक्शेकदम पर चले और छोटी सी उम्र में ही सफलता का वो मुकाम हासिल किया जहाँ तक पहुंचना हर व्यक्ति का सपना होता है। पिता को अपना आदर्श मानने वाले सचिन पायलट ने 10 फरवरी 2004 को राजेश पायलट के जन्मदिन वाले दिन राजनीति में पदार्पण किया।

इसी साल इन्होंने दौसा से लोकसभा चुनाव लड़ा और 14वीं लोकसभा के सबसे युवा सांसद बने। उस समय इनकी आयु मात्र 26 वर्ष थी। 15 वीं लोकसभा में ये राजस्थान के अजमेर निर्वाचन क्षेत्र से सांसद चुने गये। मनमोहन सिंह के दूसरे कार्यकाल में ये कॉर्पोरेट मामलों के मंत्री भी रहे।

सचिन पायलट का सपना था कि वे अपने पिता और दादाजी की तरह आर्म्ड फ़ोर्सेस से जुड़ें इसलिए ये 6 सितंबर 2012 को क्षेत्रीय सेना में सम्मिलित हुए। क्षेत्रीय सेना में ऑफिसर होने के चलते इन्हें 'लेफ्टिनेंट पायलट' भी पुकारा जाता है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	प्रभाव -
अनुभव -	संवाद क्षमता -
दूरदर्शिता -	छवि -
सक्रियता -	नेतृत्व क्षमता -
जनता से जुड़ाव -	लोकप्रियता -

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर सचिन पायलट प्रभावशाली श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

प्रतिभाशाली

कॉनराड कोंगकल संगमा

राज्य को प्रगति के पथ पर लाने का इरादा

अपनी स्पष्टवादिता और जनसुलभता के लिए मशहूर कॉनराड कोंगकल संगमा मेघालय के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री हैं। मेघालय पर पिछले 10 सालों से कांग्रेस का वर्चस्व था। ये कॉनराड संगमा की मेहनत का ही नतीजा है कि यहाँ 2018 में हुए असेंबली इलेक्शन में नेशनल पीपल्स पार्टी (एनपीपी) जिसकी नींव इनके पिता पी.ए. संगमा ने रखी थी, दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। संगमा ने भारतीय जनता पार्टी सहित कई पार्टी और विधायको को जोड़ कर मेघालय में अपनी सरकार बनाई है।

27 जनवरी 1978 को तुरा में पैदा हुए संगमा की प्रारंभिक शिक्षा सेंट कोलम्बस विद्यालय, नई दिल्ली से तथा उच्च शिक्षा लंदन विश्वविद्यालय तथा पेन्सिल्वेनिया विश्वविद्यालय से हुई है। कॉनराड संगमा ने पिता स्व. पीए संगमा से राजनीति की बारीकियां सीखीं और पढ़ाई पूरी करने के बाद 1990 के दशक में अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की। साल 2008 में ये मेघालय विधानसभा पहुंचे। साल 2009 से 2013 तक संगमा नेता विपक्ष की भूमिका में रहे। साल 2016 में पिता की मृत्यु के बाद ये अपने परिवार की पारंपरिक लोकसभा सीट तुरा से सांसद बने। कॉनराड कोंगकल संगमा पिता की विरासत को आगे बढ़ाना चाहते हैं। वे अपनी पार्टी की शाखाएं पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में फैलाने में लगे हुए हैं। अभी एनपीपी केवल मेघालय, मणिपुर और नागालैंड में है। संगमा अपनी पहचान पूरे पूर्वोत्तर के नेता के रूप में बनाना चाहते हैं। राजनीति के अलावा संगमा सामजिक कार्यों में भी सक्रिय हैं। ये पीए संगमा फाउंडेशन के अध्यक्ष हैं, जो शिक्षा क्षेत्र और पर्यावरण क्षेत्र से जुड़ी है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -
अनुभव -
दूरदर्शिता -
सक्रियता -
जनता से जुड़ाव -
प्रभाव -
संवाद क्षमता -
छवि -
नेतृत्व क्षमता -
लोकप्रियता -

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर कॉनराड कोंगकल संगमा प्रतिभाशाली श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

ऊर्जावान

आदित्य ठाकरे

मराठी राजनीति के सर्वाधिक ऊर्जावान युवा

युवा,ओजस्वी और जोशीले 28 वर्षीय आदित्य ठाकरे राजनीति के उर्जावान युवा चेहरा हैं। पार्टी के अधिकतर कार्यकर्ता उनमें बालासाहेब की छवि देखते हैं। आदित्य शिवसेना की युवा सेना प्रमुख हैं। 19 जून 2018 को इनकी शिवसेना में नेता के रूप में ताजपोशी हुई है। 13 जून 1990 को मुंबई,महाराष्ट्र में जन्मे आदित्य ठाकरे की शुरूआती पढ़ाई बॉम्बे स्कॉटिश स्कूल से हुई है।

इन्होंने सेंट ज़ेविएर्स कॉलेज, मुंबई से हिस्ट्री में बीए किया है और केसी लॉ कॉलेज से एलएलबी की डिग्री प्राप्त की है। आदित्य ठाकरे एक कवि भी हैं। आदित्य के राजनीति में आने का संकेत उद्धव ने 2008 में ही दे दिया था। 2009 के चुनाव में आदित्य ने शिवसेना के लिए प्रचार भी किया था। 2010 में आदित्य ने 'युवा सेना' के जरिए अपनी राजनीतिक पारी का आगाज़ किया। आदित्य शिक्षा की बेहतरी और युवाओं को रोज़गार दिलाने की दिशा में काम कर रहे हैं। उनका प्रयास है कि पाठ्यक्रम जॉब ओरिएंटेड हो ताकि युवाओं को नौकरी में दिक्कत ना हो। पर्यावरण को लेकर भी आदित्य काफी जागरुक हैं। ये इन्हीं के प्रयासों का परिणाम है कि महाराष्ट्र सरकार ने प्लास्टिक के उपयोग के विरोध में एक्ट बनाया है और इसे सख्ती से लागू भी कर रही है। आदित्य ने किसी भी अपराध से बचाव के लिए जूडो/कराटे का प्रशिक्षण देने के लिए पहल की है। साथ ही म्युनिसिपल स्कूलों में बाल स्वास्थ्य देखभाल के आंदोलन की शुरुआत भी की है। आदित्य ठाकरे शिवसेना को राष्ट्रीय पार्टी के तौर पर पहचान दिलाने के लिए जी-जान से जुटे हुए हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	प्रभाव -
अनुभव -	संवाद क्षमता -
दूरदर्शिता -	छवि -
सक्रियता -	नेतृत्व क्षमता -
जनता से जुड़ाव -	लोकप्रियता -

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर आदित्य ठाकरे **ऊर्जावान** श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

बेजोड़ ★★★★★

पेमा खांडू

उम्मीद की कसौटी पर खरा उतरना ही सपना

कम उम्र में सियासत में ऊंचा मुकाम पाना आसान नहीं है , मात्र 37 साल की उम्र में अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री बने पेमा खांडू एक मंझे हुए राजनीतिकार हैं। ये राजनीति के हर दांव-पेंच से भली भांति वाकिफ हैं, विपरीत परिस्थती को अपने अनुकुल बना लेना कोई आसान बात नहीं है। अपने मुख्यमंत्री काल में पेमा की नेतृत्व क्षमता साफ परिलक्षित होती है। खांडू वर्तमान में देश के सबसे युवा मुख्यमंत्री हैं।

21 अगस्त 1979 में अरुणाचल प्रदेश के तवांग में जन्मे पेमा खांडू अरुणाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और दिग्गज नेता दोरजी खांडू के बेटे हैं। पेमा ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के हिंदू कॉलेज से स्नातक किया है। इसके बाद इन्होंने राजनीति की ओर रुख किया और साल 2000 में कांग्रेस से जुड़े।

साल 2011 में पिता की मौत के बाद उनके निर्वाचन क्षेत्र मुक्तो के लिए हुए उपचुनाव में पेमा ने निर्विरोध जीत हासिल की। साल 2014 में भी इन्होंने इस सीट से जीत हासिल की। सितम्बर 2016 को पेमा खांडू पीपुल्स पार्टी आफ अरुणाचल और बाद में भाजपा में शामिल हो लगातार तीन बार सरकार गठित करने में सफल रहे हैं ,

मोंपा जनजाति से ताल्लुक रखने वाले पेमा खांडू प्रदेश में खेलों को बढ़ावा देने और शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। साथ ही सरकारी क्षेत्र के बाहर युवाओं को रोजगार के अवसर मुहैया करवाने के लिए भी प्रयासरत हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	■ (बेहतरीन)	प्रभाव -	■ (बेहतरीन)
अनुभव -	■ (बेहतरीन)	संवाद क्षमता -	■ (बेहतरीन)
दूरदर्शिता -	■ (बेहतरीन)	छवि -	■ (अच्छा)
सक्रियता -	■ (बेहतरीन)	नेतृत्व क्षमता -	■ (बेहतरीन)
जनता से जुड़ाव -	■ (बेहतरीन)	लोकप्रियता -	■ (बेहतरीन)

■ बेहतरीन ■ अच्छा ■ सामान्य ■ कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर पेमा खांडू बेजोड़ श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

योग्य

दुष्यंत चौटाला

समाजिक सरोकार वाले युवा

'लोकराज लोकलाज से चलता है। राजनीति में लोक और लाज सर्वोपरि है तथा राज पूरी तरह सेवाभाव से होना चाहिये', ये मानना है हरियाणा की हिसार लोकसभा सीट से इंडियन नेशनल लोकदल के सांसद दुष्यंत चौटाला का।

3 अप्रैल 1988 को हिसार में जन्मे दुष्यंत चौटाला का नाम भारतीय संसद के इतिहास में सबसे कम उम्र का सांसद बनने के चलते लिम्का बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकाड्‌र्स में दर्ज है। वे अपने परिवार की चौथी पीढ़ी के नेता हैं। दुष्यंत साल 2013 सक्रिय राजनीति में उतरे और धीरे-धीरे हरियाणा के यूथ आइकॉन बन गये।

कैलिफ़ोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी से बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन में बीएससी की डिग्री लेने वाले दुष्यंत चौटाला की संसद में पहचान युवा ऊर्जावान नेता के रूप में है। सामाजिक कार्यों में दुष्यंत चौटाला की विशेष रुचि है। इनके नेतृत्व में आईएनएसओ ने रोहतक में सबसे ज्यादा अंग दान के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। वे शिक्षा और खेलों के प्रचार-प्रसार और हरियाणा की संस्कृति तथा विरासत के संरक्षण और संवर्धन के लिए भी कार्यरत हैं। दुष्यंत चौटाला पहले भारतीय हैं जिन्हें एरिजोना (यूएसए) की असेंबली में उच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	बेहतरीन	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर दुष्यंत चौटाला योग्य श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

शक्ति

पूनम महाजन

राजनीतिक शुचिता एंव प्रखर राष्ट्रवाद को समर्पित

अपने 11 साल के राजनीतिक सफ़र में अपनी काबिलियत के दम पर अपनी पहचान बनाने वालीं पूनम महाजन भाजपा का एक युवा चेहरा हैं। मात्र 37 साल की उम्र में उनके नाम तीन बड़ी कामयाबियां दर्ज हैं- वो महाराष्ट्र की उत्तर-मध्य मुंबई लोकसभा क्षेत्र से भाजपा की सांसद हैं, भारतीय जनता युवा मोर्चा की अध्यक्ष हैं साथ ही भारतीय बास्केट बॉल संघ की प्रमुख भी हैं।इस पद को संभालने वाली वे पहली महिला हैं।

राजनीति से पूनम महाजन का पुराना नाता है। उनके पिता प्रमोद महाजन भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव होने के साथ साथ अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में केंद्रीय मंत्री भी थे। पूनम 2006 में पिता प्रमोद महाजन की मौत के बाद करीबी रिश्तेदार और दिग्गज नेता गोपीनाथ मुंडे के कहने पर भाजपा में शामिल हुईं। 2009 में पहली बार वे घाटकोपर वेस्ट से सांसदी का चुनाव लड़ीं, लेकिन सफल नहीं हो सकीं।इसके बाद 2014 में बीजेपी की ही टिकट से मुंबई नॉर्थ सेंट्रल सीट से इन्होने दमदार जीत दर्ज की।

9 दिसंबर 1980 को जन्मीं पूनम की हायर स्टडीज अमेरिका और लंदन में हुई है। इन्होंने ब्राइटन स्कूल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट से 2012 में मैनेजमेंट की डिग्री प्राप्त की है। इसके अलावा इन्होंने टेक्सास, यूएस के एयर मिस्ट्रल फ्लाइंग स्कूल से पायलट लाइसेंस हासिल किया है। शहरी विकास और आधारभूत संरचना, महिला सुरक्षा, सशक्तिकरण, पशु सुरक्षा तथा पर्यावरण जैसे विषयों में उनकी विशेष रुचि है। इन्हे वर्ष 2017 के फेम इंडिया एशिया पोस्ट 'श्रेष्ठ सांसद' अवार्ड से भी नवाजा गया है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	प्रभाव -
अनुभव -	संवाद क्षमता -
दूरदर्शिता -	छवि -
सक्रियता -	नेतृत्व क्षमता -
जनता से जुड़ाव -	लोकप्रियता -

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर पूनम महाजन शक्ति श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

लोकप्रिय

दीपेंद्र सिंह हुड्डा

आसमां छूने का हौसला

एक शानदार विरासत, दमदार राजनीतिक प्रदर्शन और असरदार विनम्रता, यही पहचान है 16वीं लोकसभा में रोहतक का प्रतिनिधित्व कर रहे दीपेंद्र सिंह हुड्डा की जो लगातार तीसरी बार सांसद चुन गये हैं। 2005 में वे चौदहवीं लोकसभा के दौरान हुए उपचुनाव में पहली बार सांसद बने। इसके बाद 2009 और 2014 में उन्होंने लोकसभा का चुनाव जीता।

2014 में तो कांग्रेस विरोधी लहर के बावजूद अपनी लोकसभा सीट बचाये रखने में कामयाब रहने वाले वह हरियाणा के एकमात्र सांसद हैं। हुड्डा हरियाणा में अपनी विशेष पहचान रखने वाले राजनीतिक परिवार के तीसरी पीढ़ी के नेता हैं।

सादगी पसंद हुड्डा के बारे में कहा जाता है कि वह अपने राजनीतिक रसूख के इस्तेमाल से हमेशा परहेज करते हैं।

दीपेंद्र का जन्म 4 जनवरी 1978 को हरियाणा रोहतक में हुआ। उन्होंने एमडी विश्विद्यालय के बिरला इंस्ट्यूट से इंजीनियरिंग और अमेरिका के इंडियाना विश्वविद्यालय के केली स्कूल ऑफ बिजनेस से एमबीए की पढ़ाई की। वे अजमेर के प्रतिष्ठित मेयो कॉलेज से भी शुरुआती शिक्षा हासिल कर चुके हैं। राजनीति में उतरने से पहले उन्होंने इन्फोसिस और रिलायंस इंडस्ट्री में भी काम किया। ग्रामीण आधारभूत संरचना, पानी, खेती, शिक्षा और ऊर्जा जैसे विषयों में उन्हें विशेष दक्षता हासिल है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	अच्छा	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	अच्छा
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर दीपेंद्र सिंह हुड्डा लोकप्रिय श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

कर्मयोद्धा

प्रवेश वर्मा

सहज सुलभ युवा राजनेता

राजनीति को समाज सेवा का माध्यम मानने वाले युवा सांसद प्रवेश वर्मा दिल्ली से सांसद हैं। इस युवा नेता में समाज के लिए कुछ करने का जज़्बा कितना प्रबल है ये आपको इनके कामों से ज्ञात हो जाएगा- साल 2000 में गुजरात में भूकंप आने के बार कच्छ के दो गांवों और उड़ीसा में तूफ़ान आने के बाद उजड़ चुके चार गांवों को इन्होने फिर से बसाया है ।

इन्होनें कारगिल में शहीद हुए 260 शहीदों के परिवारों को 1-1 लाख रूपये की आर्थिक मदद की। गरीब लड़कियों की शादी करवाते हैं। लोगों को जागरुक करने के उद्देश्य से शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित करवाते हैं ।

प्रवेश वर्मा के पिता साहिब सिंह बीजेपी के वरिष्ठ नेता और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री थे। साल 2007 में एक कार दुर्घटना में इनके पिता का देहांत हो गया इसके बाद प्रवेश ने राजनीति में आने का इरादा किया। वर्ष 2013 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में पार्टी ने जब इन्हें महरौली विधानसभा सीट से टिकट मिला , इस चुनाव में प्रवेश की माँ साहिब कौर और पत्नी स्वाति सिंह वर्मा ने उनके लिए कैंपेनिंग की। इस चुनाव में प्रवेश को जीत हासिल हुई । साल 2014 के आम चुनाव में बीजेपी ने प्रवेश को पश्चिम दिल्ली से टिकट दिया, इस चुनाव में प्रवेश वर्मा रिकॉर्ड मार्जिन से जीतकर पहली बार लोकसभा पहुंचे।

7 नवंबर 1977 को जन्मे प्रवेश साहिब सिंह वर्मा ने दिल्ली के किरोड़ीमल कॉलेज से स्नातक किया है और फोर स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट से बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर्स किया है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	अच्छा	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर प्रवेश वर्मा कर्मयोद्धा श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

कर्मठ

तेजस्वी यादव

राजनीति में मजबूती से उभररते

अपने नाम के अनुरूप ही तेजपूर्ण, जोश और भरोसे से भरे तेजस्वी यादव की राजनीतिक पृष्ठभूमि का लाभ पहचान के स्तर पर तो मिला परन्तु बड़ी चुनौती के साथ। ये चुनौती राजनीति में सफलता और विफलता की बेहद पतली लकीर के बीचों बीच खिंची थी। आज के तेजस्वी ने युवा राजनीति में जो मुकाम कायम किया है वो किसी के लिये आसान नहीं माना जा सकता। तेजस्वी एक मुखर वक्ता हैं, इन्होंने सत्ता में रहते और सत्ता के बाद भी जो अपना राजनैतिक सामाजिक इकबाल कायम किया है वो इन्हें बदलाव के पथिक के तौर पर एक विशेष स्थान देता है।

आधुनिक राजनीति एक ऐसा अस्थायी कार्य है जिसमें परिणाम के लिये जन भावना ही प्रबल मानी जाती है, जनता किसे अपना नेता मान ले और कब नजर से उतार दे इसका आकलन बड़े-बड़े राजनैतिक पंडित के लिये भी संभव नहीं। यूं तो इन्होंने 2014 के लोकसभा चुनाव में खासी मेहनत की लेकिन पार्टी को कुछ ज्यादा सफलता हाथ नहीं लगी। परन्तु 2015 के विधानसभा चुनाव में महागठबंधन में तेजस्वी के तेज को चमक मिली। उनकी पार्टी सत्ता में आई और वे प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बनाये गये।

अपने इस कार्यकाल में तेजस्वी को राजनैतिक प्रशासनिक क्षमता को निखरने का मौका मिला और गठबंधन के टूटने पर ये एक युवा महानायक के तौर पर उभरे, जिसकी तारीफ उनके विरोधी भी करते हैं। बड़े-बड़े सपनों के साथ राजनीति में अपना भाग्य अजमा रहे युवा तेजस्वी को अपना आदर्श मानने को तैयार हैं वहीं पार्टी व संगठन पर इनकी मजबूत पकड़ कायम है। तेजस्वी इस बात को भली भाँति समझते हैं कि राजनीति का परम उद्देश्य जनहित है और जनता ही जनार्दन है। तेजस्वी खास शैली में बोलने और सीधे तौर पर जुड़ने के प्रयास के चलते युवाओं सहित सभी वर्ग से तेजी से जुड़ रहे हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	अच्छा	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर तेजस्वी यादव कर्मठ श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

लगनशील ★★★★★

वरुण गांधी

लोकप्रिय युवा राजनेता

अपने आक्रामक अंदाज़ और कुशल भाषण शैली के लिए मशहूर युवा नेता वरुण गांधी उत्तरप्रदेश के सुल्तानपुर से सांसद हैं। 1980 में पैदा हुए वरुण गांधी ने बहुत छोटी उम्र से ही राजनीति का ककहरा सीखना शुरू कर दिया था।

साल 1999 के लोकसभा चुनाव में ये अपनी मां मेनका गांधी के साथ चुनावी रैलियों में नजर आए और 2004 में भाजपा में शामिल हो गये। साल 2009 में इन्होंने पीलीभीत लोकसभा सीट से चुनाव जीता। वरुण गांधी को मार्च 2013 में राजनाथ सिंह की टीम में शामिल किया गया और राष्ट्रीय महासचिव चुना गया। वरुण पार्टी के इतिहास में सबसे युवा महासचिव बने। वरुण गाँधी की प्रारंभिक शिक्षा ऋषि वैली स्कूल और मॉडर्न स्कूल नई दिल्ली से हुई हैं। इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ लन्दन से इकोनॉमिक्स में बीएससी ऑनर्स की डिग्री ली है।

वरुण गांधी एक निर्भीक जन सरोकार रखने वाले नेता हैं। शिक्षा का मुद्दा हो या किसानों का या फिर अल्पसंख्यकों का, ये हर मुद्दे पर जनता के साथ खड़े दिखते हैं और जनता की मदद करने में कभी पीछे नहीं हटते। वरुण गांधी पिछले 9 सालों से सांसद के रूप में मिलने वाले वेतन को गरीब और जरूरतमंदों में बांट रहे हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	सामान्य	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	अच्छा	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

FAME INDIA Fi

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर वरुण गांधी लगनशील श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

हौसला

जिग्नेश मेवाणी

संघर्ष से सामर्थ्य का विकास करते

प्रखर, प्रभावी और आक्रामक जिग्नेश मेवाणी नए दौर के दलित नेता के रूप में उभरे हैं। उनकी आँखों में दलितों के उत्थान के लिए कुछ कर गुजरने की चाह साफ़ झलकती है। बिना किसी पार्टी में शामिल हुए जिग्नेश ने पहली ही बार में गुजरात विधानसभा चुनाव में जीत हासिल की और वाडगाम विधानसभा सीट से विधायक बने।

11 दिसम्बर 1982 में गुजरात के अहमदाबाद में जन्मे मेवाणी तब अचानक सुर्खियों में आए जब उन्होंने दलितों की यात्रा का आयोजन किया और उसे नाम दिया "दलित अस्मिता यात्रा।" जिग्नेश मेवाणी ने साल 2003 में एच के आर्ट्स कॉलेज अहमदाबाद से इंग्लिश में ग्रेजुएशन किया है। यही वो संस्था है जहाँ मेवाणी के वैश्विक नजरिये को आकार मिला। साल 2004 में उन्होंने पत्रकारिता में डिप्लोमा किया और मुंबई चले गये, जहाँ उन्होंने 3 साल तक एक मैग्जीन 'अभियान' में बतौर पत्रकार काम किया। साल 2008 में वे लौट आए और उन्होंने कार्यकर्ता-वकील मुकुल सिन्हा द्वारा संचालित नागरिक अधिकार संगठन जन संघ मंच (जेएसएम) के साथ काम करना शुरू कर दिया। मुकुल सिन्हा के ही कहने पर जिग्नेश ने एलएलबी किया। इस दौरान उन्होंने दंगा पीड़ितों और वर्कर यूनियन के लिए भी लड़ाई लड़ी। पत्रकार, वकील फिर सामजिक कार्यकर्ता और अब नेता बने मेवाणी विभिन्न मोर्चों पर सामाजिक कार्यों से जुड़े रहकर दलितों, मज़दूरों व किसानों के मुद्दे उठाते रहे हैं। मेवाणी देश में दलित आंदोलन को मज़बूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	सामान्य	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	अच्छा	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर जिग्नेश मेवाणी हौसला श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

जिम्मेदार

अनुप्रिया पटेल

स्वच्छ छवि व दूर दृष्टि की सफल राजनेत्री

राजनीति में आना मोदी कैबिनेट की सबसे युवा और तेज-तर्रार नेता अनुप्रिया सिंह पटेल की पसंद नहीं नियति थी। पिता की असमय मृत्यु के बाद पार्टी और लोगों की उम्मीदें दोनों को बचाए रखने के लिए ये राजनीति में उतरीं 31 साल में ये विधायक बनीं और 33 साल में सांसद बन गयीं। अनुप्रिया पटेल उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर से अपना दल की सांसद हैं और मोदी मंत्रिमंडल में अनुप्रिया को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्यमंत्री बनाया गया है।

28 अप्रैल 1981 को कानपुर में जन्मीं अनुप्रिया ने दिल्ली के श्रीराम लेडी कॉलेज से बीए, एमिटी कॉलेज नोएडा से मनोविज्ञान में एमए और कानपुर यूनिवर्सिटी से एमबीए किया है। राजनीति में आने से पहले ये अध्यापन के क्षेत्र में थीं। अनुप्रिया पटेल के पिता सोनेलाल पटेल यूपी के कद्दावर नेता थे। कुर्मी वोट बैंक पर उनकी अच्छी पकड़ थी। सोनेलाल ने 'अपना दल' नाम की पार्टी बनाई थी जिसकी पूर्वांचल में अच्छी पकड़ थी। 2009 में पिता की असमय मृत्यु के बाद अनुप्रिया ने परिवार और पार्टी दोनों को संभाला। उन्होंने पार्टी में महासचिव का पदभार संभाला। 2012 के उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में वे चुनावी समर में उतरीं और वाराणसी की रोहिन्यां विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा। इस चुनाव में अनुप्रिया को भारी जन समर्थन मिला और वे विधानसभा की दहलीज़ पार कर गयीं।

2014 के लोकसभा चुनाव में अनुप्रिया ने हवा का रुख भांप बीजेपी से हाथ मिलाया और 2 सीटें जीतकर लोकसभा पहुँच गयीं। बाद में अनुप्रिया ने 'अपना दल (एस)' नाम से नयी पार्टी का गठन किया है। लोकसभा में अनुप्रिया पटेल बढ़-चढ़कर अपने क्षेत्र के मुद्दे उठाती रही हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	बेहतरीन	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	अच्छा	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर अनुप्रिया पटेल जिम्मेदार श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

शख्सियत

कन्हैया कुमार

हौसले की उड़ान से बनाई है पहचान

क्रांतिकारी विचारों से ओतप्रोत युवा चेहरे कन्हैया कुमार में भारतीय राजनीति के भविष्य की संभावनाए छुपी है। जेएनयू छात्र संगठन के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार एक प्रखर वक्ता हैं। जब ये अपनी शैली में भाषण देते हैं तो क्या युवा क्या वृद्ध सब इनको सुनने के लिए मजबूर हो जाते हैं। जनवरी 1987 में बिहार के बेगुसराय के बीहट गाँव में जन्मे कन्हैया कुमार बचपन से ही मेधावी छात्र रहे हैं।

इनकी प्रारम्भिक पढ़ाई बरौनी के आरकेसी हाई स्कूल में हुई। अपने स्कूल दिनों में, ये अभिनय में रुचि रखते थे और इंडियन पीपल्स थियेटर एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य थे। 2002 में कन्हैया ने पटना के कॉलेज ऑफ कॉमर्स में दाखिला लिया और भूगोल से स्नातक में प्रथम श्रेणी प्राप्त की। यहीं से उनकी छात्र राजनीति की शुरुआत हुई। नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी से सोशियोलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद, कन्हैया ने जेएनयू (दिल्ली) में अफ्रीकन स्टडीज में पीएचडी के लिए एडमिशन ले लिया। कन्हैया कुमार ऑल इंडिया स्टूडेंट फेडरेशन के ऐसे पहले सदस्य बने जो जेएनयू में छात्र संघ के अध्यक्ष पद के लिए चुने गए।

अक्टूबर 2016 में कन्हैया कुमार की आत्मकथा 'बिहार टू तिहाड़': माय पॉलिटिकल जर्नी' प्रकाशित हुई है। इस किताब में उन्होंने बिहार के गाँव में बीते अपने बचपन से लेकर पटना के कॉलेज के दिनों और दिल्ली में आकर राजनीतिक सफ़र की शुरुआत का वर्णन किया है। 29 अप्रैल 2018 को, कन्हैया कुमार भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की 125 सदस्यीय केन्द्रीय परिषद के लिए चुने गए हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	सामान्य	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	बेहतरीन

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर कन्हैया कुमार शख्सियत श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

उम्मीद

आतिशी

एकमात्र उद्देश्य समाजिक मूल्यों की स्थापना

समाज कल्याण विशेषकर शिक्षा की बेहतरी के लिए कुछ कर गुजरने की 'आतिश' अपने दिल में लिए आतिशी मार्लेना अपने नाम की वजह से काफी सुर्खियों में रही हैं। इनके विरोधी इनके 'मार्लेना' सरनेम के चलते इनको विदेशी बता रहे हैं लेकिन हक़ीक़त इससे बहुत जुडा है। दरअसल आतिशी के माता-पिता (जो दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे) ने मार्लेना सरनेम क्मयूनिज्म के जनक कार्ल मार्क्स और रूसी क्रांति के हीरो लेनिन से प्रेरित होकर रखा था।

8 जून 1981 को दिल्ली में जन्मीं आतिशी ने दिल्ली विश्वविद्यालय और ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त की है। आतिशी मार्लेना ने अपने करियर की शुरुआत एक सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर की थी।उन्होंने पब्लिक पॉलिसी से जुड़े कई गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर काम किया है। उन्होंने 2013 में 'आप' की पॉलिसी तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 2015 दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी का घोषणापत्र तैयार करने वालों में वे भी शामिल थीं। शिक्षा के क्षेत्र में आतिशी का योगदान सराहनीय है। दिल्ली की शिक्षा प्रणाली में आम आदमी पार्टी की सरकार के दौरान जो भी अहम कदम उठाए गए हैं उनमें आतिशी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिलहाल आतिशी आम आदमी पार्टी की पॉलिटिकल अफेयर्स कमिटी की सदस्या और आम आदमी पार्टी की प्रवक्ता भी है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	अच्छा
दूरदर्शिता -	बेहतरीन	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	सामान्य	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर आतिशी उम्मीद श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

कामयाब

प्रशांत किशोर

चर्चित और बेहतरीन रणनीतिकार

हाल ही में जनता दल (यूनाइटेड) से जुड़े चुनाव रणनीतिकार किंग प्रशांत किशोर किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। वे देश के सबसे भरोसेमंद रणनीतिकारों में से एक हैं। 2014 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी की लकदक 3 डी रैलियों, चाय पर चर्चा, रन फॉर यूनिटी और मंथन जैसे अभियानों के पीछे दिमाग प्रशांत किशोर का था। विधानसभा चुनाव में उन्होंने नीतीश कुमार की बिहार में ऐसी आंधी चलाई जिससे सब ने इनकी रणनीति का लोहा मान लिया,

साल 2011 में बिहार से ताल्लुक रखने वाले प्रशांत किशोर अफ्रीका में यूएन हेल्थ एक्सपर्ट की नौकरी छोड़कर भारत आये और टीम मोदी से जुड़े। उन्होंने राजनीति में ब्रांडिंग के अनूठे प्रयोग द्वारा 2012 के गुजरात विधानसभा चुनाव और 2014 के आम चुनाव में ब्रांड मोदी को मजबूत किया। बिहार में नीतीश कुमार की चुनावी रणनीति बनाने में मदद की जिसके चलते नीतीश कुमार ने अपने विरोधियों पर विजय पायी। प्रशांत किशोर की चमकदार व दमदार रणनीति के चलते पंजाब में कांग्रेस का झंडा बुलंद हुआ । कांग्रेस (वाईएसआर) के प्रमुख जगन मोहन रेड्डी की छवि ने भी पीके का साथ पाकर असर दिखाया। सितंबर 2018 से प्रशांत किशोर ने जनता दल (यूनाइटेड) के सक्रिय सदस्य के तौर पर अपनी राजनीतिक पारी का आगाज़ किया है। वर्तमान मे प्रशांत जद (यू) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाये गये है। अब इनके सामने चुनौती ये है कि लोकसभा चुनाव में बिहार में जेडीयू के खाते में आईं सीटों पर सफलता कैसे मिले। नीतीश कुमार के विजय रथ को प्रशांत किशोर जैसे सारथी का मिलना कुछ नया रंग अवश्य कायम करेगा, इनके अनुभव का लाभ इनकी पार्टी और राज्य की जनता को मिलेगा, ऐसी संभावना तो बनती है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	■ (बेहतरीन)	प्रभाव -	■ (बेहतरीन)
अनुभव -	■ (बेहतरीन)	संवाद क्षमता -	■ (अच्छा)
दूरदर्शिता -	■ (बेहतरीन)	छवि -	■ (बेहतरीन)
सक्रियता -	■ (बेहतरीन)	नेतृत्व क्षमता -	■ (बेहतरीन)
जनता से जुड़ाव -	■ (कोई राय नही)	लोकप्रियता -	■ (बेहतरीन)

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर प्रशांत किशोर कामयाब श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

■ बेहतरीन ■ अच्छा ■ सामान्य ■ कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

क्षमतावान

हार्दिक पटेल

युवाओं में चेतना जगाने के लिये संघर्ष

केवल 22 साल की उम्र में गुजरात सरकार की नींद उड़ा देने वाले इस युवा नेता को 3 साल पहले तक कोई नहीं जानता था। जुलाई 2015 में पटेल आरक्षण को लेकर गुजरात के महेसाणा में आयोजित एक छोटी-सी रैली को इस युवा ने इतने बड़े आन्दोलन का रूप दे दिया कि गुजरात की राजनीति हिल गयी। ये आन्दोलन पटेल समाज, शिक्षा और सरकारी नौकरियों में आरक्षण की मांग को लेकर कर रहा था। एक के बाद एक ताबड़तोड़ रैलियों में उमड़े जन सैलाब ने इस युवा को अपना नेता मान लिया। गुजरात सरकार की ईंट से ईंट बजा देने वाले इस युवा नेता का नाम है हार्दिक पटेल।

अहमदाबाद चंद्रनगर गांव में रहने वाले हार्दिक पटेल कॉमर्स से स्नातक हैं। उनका जन्म 20 जुलाई 1993 को एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। हार्दिक ने पाटीदारआंदोलन की शुरुआत तब की जब खुद वो इसका शिकार बने। हार्दिक ने जब युवाओं की बात को मंच पर उठाना शुरू किया तो उन्हें मंझे हुए नेताओं ने तवज्जो नहीं दी, लेकिन हार्दिक को पता था कि उन्होंने जिस बात को छेड़ा है वह उनके समाज के तार को जरूर छुएगी, हुआ भी वही महज एक साल के अंदर हार्दिक पटेल का नाम हर पटेल की जुबान पर चढ़ गया खासकर युवाओं के। इस युवा पाटीदार नेता का उद्देश विरोध की नहीं समाधान की राजनीति करना है और इसी दिशा में वे लड़ाई लड़ रहे हैं। फिलहाल हार्दिक पटेल किसानों की समस्याओं और अधिकारों की लड़ाई लड़ने की रणनीति बनाने में व्यस्त हैं।हार्दिक पटेल अब गुजरात से बाहर निकलकर विभिन्न आंदोलनों का हिस्सा बन रहे हैं। उन्होंने गुजरात के कुछ इलाकों में युवा संवाद का कार्यक्रम भी शुरू किया है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्ज्वल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	अच्छा	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर हार्दिक पटेल क्षमतावान श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

प्रेरक

राम मोहन नायडू किंजरपू

संवाद क्षमता से राष्ट्रीय पटल पर पहचान बनाते

मोदी सरकार के खिलाफ़ संसद में अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान एक युवा नेता ने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। आंध्रप्रदेश से आने के बावजूद अपनी शानदार हिंदी में जब इस युवा नेता ने सरकार पर अपने धारदार सवालों की बौछार शुरू की तो संसद में सबकी नज़रें उनकी तरफ मुड गयीं। तेलगु देशम पार्टी के क्षितिज पर उभरते नए जोशीले सितारे है राम मोहन नायडू किंजरपू।

अविश्वास प्रस्ताव पर अपने इस छोटे से भाषण के जरिये छोटे नायडू ने ना केवल टीडीपी आलाकमान को अपनी काबिलियत का सबूत दिया बल्कि सत्ता पक्ष को भी ये बता दिया कि आने वाले वक़्त में आंध्रप्रदेश में उनके तेवर का सामना करना आसान नहीं होगा। राम मोहन नायडू आंध्रप्रदेश की श्रीकाकुलम लोकसभा सीट से टीडीपी के सांसद हैं।

18 दिसम्बर 1987 में जन्मे राम मोहन नायडू किंजरपू ने अमेरिका से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग और एमबीए की पढ़ाई की है। ये टीडीपी के वरिष्ठ नेता रहे किंजरपू येरन नायडू के बेटे हैं। हर अमेरिका से पढ़े युवा की तरह राम मोहन का भी सपना अपना खुद का बिज़नेस एम्पायर खड़ा करना था। लेकिन 2012 में पिता की असमय मृत्यु राम मोहन को राजनीति में खींच लायी। अपने जिले को समझने के लिए इन्होंने 650 किमी साइकिल यात्रा की। साल 2014 में श्रीकाकुलम से जीतकर वे 16वीं लोकसभा के सदस्य बने। श्रीकाकुलम अब विभाजित आंध्रप्रदेश के उत्तर तटीय क्षेत्र के उन ३ जिलों में शामिल है जिसे टैक्स प्रोत्साहनों समेत विशेष श्रेणी का दर्जा प्राप्त है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर राम मोहन नायडू किंजरपू प्रेरक श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

कुशल

चिराग पासवान

रोशनी की युवा उम्मीद

मानव सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं मूलमंत्र पर कार्य कर रहे हैं सांसद चिराग पासवान। बिहार के दिग्गज नेता व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान के बेटे चिराग पासवान ने अपने पिता की राजनीतिक विरासत को संभाला है और जिस तरह से जनता के बीच गए, उन्हें जनता ने हाथों हाथ लिया और जमुई से सासंद चुनकर इन्हें सदन में भेजा।

कंप्यूटर साइंस में बीटेक चिराग ने राजनीति के तकनीक को अपने पिता से सीखा, राजनीति के माध्यम से हर वर्ग को सुविधाएं देने की सोच रखने वाले चिराग ने अपना जीवन मानव सेवा में समर्पित कर दिया है।

जोशीले, गर्विले व ऊर्जा से भरपूर चिराग ने बॉलिवुड में भी अपना योगदान दिया, बतौर अभिनेता इन्होंने 'मिले न मिले हम' फिल्म में बेहतरीन अभिनय किया। पर मन में जनता की सेवा ने इन्हें राजनीति की ओर मोड़ दिया और वे लगातार जनता की सेवा में जुड़ गए। पहली बार 2014 में लोकसभा चुनाव जमुई से लड़ा और जीत दर्ज की। चिराग की लोकप्रियता युवाओं में काफी है। ये चिराग पासवान फाउंडेशन के तहत युवाओं और वंजितों के लिए कई योजनाओं पर कार्य कर रहे हैं। युवाओं को योग्यता के अनुसार आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। लोजपा के संसदीय बोर्ड के चेयरमैन के तौर पर कार्य करते हुए इन्होने अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	अच्छा	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	अच्छा	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर चिराग पासवान कुशल श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

चर्चित

हर्ष संघवी

चिंतन को विकास के फ्रेम में किया फिट

समाज के लिए कुछ बेहतर करने की चाह इनके दिल में निरंतर रहती है। काम के प्रति इनका उत्साह और समर्पण देखते ही बनता है। युवा इनको अपना आदर्श मानते हैं और इनका मानना है कि यदि किसी काम को करने के लिए आप दृढ़ संकल्पित हैं तो आप उसमें सफल ज़रूर होंगे।ऐसे ही है गुजरात की मजुरा विधानसभा सीट से बीजेपी के विधायक हर्ष संघवी ।एक कुशल नेता के गुण हर्ष में शुरू से मौजूद थे। युवावस्था से ही ये छात्र राजनीति में सक्रिय रहे हैं। सामाजिक कार्यों में इनकी विशेष रुचि है।

जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य और शिक्षा की बेहतरी के लिए हर्ष प्रयत्नशील हैं। जनजातीय इलाकों में काम करने के दौरान हर्ष को पता चला कि यहाँ के ज़्यादातर लोग सिकेल सेल नाम की अल्परक्तता की बीमारी से ग्रसित हैं। इन्होंने इस बीमारी के निदान के लिए काम करना शुरू किया और कई मेडिकल कैंप लगवाये।

8 जनवरी 1985 में जन्मे हर्ष संघवी गुजरात में बीजेपी के सबसे युवा जनरल सेक्रेटरी रहे हैं। अपने परिवार में ये पहले ऐसे व्यक्ति हैं जो राजनीति में उतरे हैं। हर्ष संघवी को साल 2012 में बीजेपी ने पहली बार मजुला विधानसभा सीट से मैदान में उतारा था। हालांकि ये मुकाबला हर्ष के लिए आसान नहीं था लेकिन इनकी ज़मीनी पकड़ ने पहली ही बार में इन्हें विधानसभा की दहलीज़ को पार करा दिया। साल 2013 में हर्ष संघवी यूथ बीजेपी के स्टेट वाइस प्रेसिडेंट बने। साल 2017 के विधानसभा चुनाव में दोबारा इन्होंने मजुला विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। वर्तमान में ये बीजेपी युवा मोर्चा के नेशनल वाइस प्रेसिडेंट हैं।

हर्ष ने अपना सारा जीवन समाज के लिए समर्पित कर दिया है। इनका लक्ष्य है कि देश के हर युवा को रोजगार मिले। इस उद्देश्य से ये अपने हर जन्मदिवस पर जॉब फेयर आयोजित करवाते हैं जिसके द्वारा आज तक 1850 युवाओं को रोज़गार मिल चुका है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	अच्छा	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	अच्छा

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर हर्ष संघवी चर्चित श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

शानदार

राघव चड्ढा

कुशल रणनीतिकार आप के वफादार

''मैंने राजनीति को नहीं चुना, राजनीति ने मुझे चुना है'', ये कहना है आम आदमी पार्टी के सबसे युवा प्रवक्ता राघव चड्ढा का। उम्र भले ही कम हो लेकिन राघव जब राष्ट्रीय चैनलों द्वारा आयोजित बहसों में पूरे आंकड़ों के साथ अपनी बात रखते हैं तो बड़े-बड़ों की बोलती बंद कर देते हैं। 11 नवम्बर 1988 को नई दिल्ली में जन्मे राघव बचपन से ही मेधावी रहे हैं। राघव ने इंटरनेशनल टैक्स एडवाइजरी और टैक्स प्राइसिंग में स्पेशलाइज़ेशन किया है। मात्र 23 साल की उम्र में राघव राजनीति में सक्रिय हो गये थे।

नवम्बर 2012 में आम आदमी पार्टी की स्थापना के समय राघव चड्ढा अपनी मोटी सैलरी की नौकरी छोड़कर पार्टी का हिस्सा बने। राघव आम आदमी पार्टी की ड्राफ्टिंग कमिटी का अभिन्न अंग रहे हैं। इन्होंने पार्टी के पॉलिसी पेपर्स बनाने और विभिन्न राष्ट्रीय महत्त्व के मुद्दों पर पार्टी का दृष्टिकोण स्थापित करने में काफी मदद की है। साल 2013 में आम आदमी पार्टी का चुनावी घोषणा पत्र तैयार करवाने और पार्टी के प्रचार-प्रसार में भी राघव की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।साल 2016 में राघव सुर्ख़ियों में तब आ गये थे जब बजट बनाने में दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसौदिया की मदद करने के लिए राघव को 1 रुपये सैलरी पर उनका सलाहकार नियुक्त किया गया था। केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने इस नियुक्ति को असंवैधानिक बताते हुए रद्द कर दिया था। इसके बाद इन्होंने गृहमंत्रालय को ढाई रुपये का डिमांड भेजकर अपना ढाई महीने का मेहनताना वापस कर दिया था।

साल 2019 के लोकसभा चुनाव को देखते हुए आम आदमी पार्टी ने राघव को दक्षिण दिल्ली लोकसभा क्षेत्र का इंचार्ज नियुक्त किया है। ये आम चुनाव राघव चड्ढा के लिए कई मायनों में ख़ास होगा।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	अच्छा	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	अच्छा	नेतृत्व क्षमता -	अच्छा
जनता से जुड़ाव -	सामान्य	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन   अच्छा   सामान्य   कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर राघव चड्ढा शानदार श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

संघर्षशील

प्रियंका सिंह रावत

संघर्ष से लक्ष्य की ओर अग्रसर

देश के प्रति प्रेम और समाज के लिए कुछ कर गुजरने का जज़्बे के कारण राजनीति में सक्रिय हुई है उत्तर प्रदेश की बाराबंकी लोकसभा सीट से बीजेपी की तेजतर्रार सांसद प्रियंका सिंह रावत।

7 अगस्त 1985 उत्तर प्रदेश के बरेली में जन्मीं प्रियंका रावत का परिवार प्रशासनिक अधिकारियों का है वहीं सक्रिय राजनीति में शामिल होने से पहले प्रियंका मीडिया प्रोफेशनल थीं। इन्होने रोहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली से जनसंचार में डिप्लोमा की पढ़ाई पूरी की है। भाजपा और आरएसएस की विचारधारा से प्रभावित प्रियंका धरने और आंदोलनों में छात्र जीवन से ही सक्रिय रहीं।

2014 के चुनाव में भाजपा ने इन्हें संसदीय चुनाव में कांग्रेस के नामी उम्मीदवार एवं पूर्व प्रशासनिक अधिकारी पी एल पुनिया के खिलाफ चुनाव लड़ने की ज़िम्मेदारी सौंपी। इस चुनाव में प्रियंका को व्यापक जीत हासिल हुई। ये स्वयंसेवी संगठन लाडली फॉउण्डेशन की मुख्य संरक्षक हैं जो बगैर किसी सरकारी मदद के सामूहिक विवाह, गरीब लड़कियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा, महिला सशक्तीकरण का काम करती हैं , प्रियंका ज्यादा से ज्यादा समय अपने संसदीय क्षेत्र में रहकर जनसमस्याओं का निदान करती रहती हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	अच्छा
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर प्रियंका सिंह रावत संघर्षशील श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

आदर्श

अविनाश रेड्डी

जनता की सेवा में विश्वास

किशोरावस्था से ही अविनाश रेड्डी राजनीति में सक्रिय हो गये थे क्योकि इनका परिवार देश की राजनीति में अपना एक स्थान रखता है । अविनाश आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस राजशेखर रेड्डी के भतीजे हैं। चुनावी राजनीति में शुरुआत से पहले अविनाश रेड्डी ने कांग्रेस पार्टी में ज़मीनी स्तर पर काम किया है । अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत इन्होंने पुलिवेंदुला के लिंगाला क्षेत्र में कांग्रेस पार्टी के प्रभारी के रूप में की।

वाईएसआर की मृत्यु के बाद जब उनके बेटे जगनमोहन रेड्डी ने वाईएसआर कांग्रेस की नींव रखी तब अविनाश ने कडपा जिले के यूथ विंग के अध्यक्ष के तौर पर वाईएसआर कांग्रेस की कमान संभाली। अपनी क्षेत्र की जनता की समस्या जानने सुलझाने के लिए इस युवा नेता ने बड़े पैमाने पर अपने जिले काम किया। धीरे-धीरे कडपा की जनता में इस युवा नेता की लोकप्रियता बढ़ने लगी। इन सब कामों ने 2014 के लोकसभा चुनाव में अविनाश को कडपा लोकसभा सीट से जीत दिलाने में मदद की। 27 अगस्त 1984 में आंध्र प्रदेश के कडपा में जन्मे अविनाश रेड्डी ने सेंट जोसफ कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग से बीटेक किया है और यूनिवर्सिटी ऑफ़ वोर्सेस्टर, यूके से एमबीए किया है। वाईएस अविनाश रेड्डी, वाईएसआर कांग्रेस के उन पांच सांसदों में से एक हैं जिन्होंने आन्ध्र प्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा ना देने के विरोध में बजट सत्र के अंतिम दिन अपना इस्तीफ़ा दे दिया था।

समाजसेवा में अविनाश की काफी रुचि है। इन्होंने अनाथालयों और वृद्धाश्रमों की मदद कई कार्यक्रम आयोजित किये हैं। ज़रूरतमंदों की मदद के लिए अविनाश हरदम तत्पर रहते हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	अच्छा
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	बेहतरीन

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर अविनाश रेड्डी आदर्श श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन   अच्छा   सामान्य   कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

मजबूत ★★★★★

गौरव गोगोई

मजबूत इरादे पक्के विश्वास के धनी

गौरव गोगोई उन चुनिंदा सांसदों में से एक हैं जो पहली बार सांसद बनने के बावजूद दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में अपनी पहचान बनाने में सफल रहे हैं। ये असम के कालियाबोर से कांग्रेस के लोकसभा सांसद हैं। महज कुछ वर्ष के राजनीतिक करियर में इन्हें पार्टी के भरोसेमंद युवा राजनेता में गिना जाने लगा है। गौरव को एक काबिल नेता, कुशल जनप्रतिनिधि और प्रखर वक्ता के तौर पर जाना जाता है।

संसद में होने वाली चर्चाओं के साथ-साथ वह टीवी पर भी स्थानीय और राष्ट्रीय मुद्दों पर कांग्रेस की बात को मजबूती से रखते नज़र आते हैं। 4 सितम्बर 1986 को दिल्ली में जन्मे गौरव गोगोई जब राजनीति में उतरे तब उनकी पहचान एक मुख्यमंत्री के बेटे के रूप में थी। लेकिन गौरव अपनी अलग पहचान बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। धीरे-धीरे गौरव लोगों के बीच लोकप्रिय होने लगे हालांकि गौरव गोगोई को राजनीति में आये महज 3 साल ही हुए थे लेकिन कांग्रेस पार्टी ने 2014 के लोकसभा चुनाव में गौरव को असम के कलियाबोर से मैदान में उतार दिया। बीजेपी लहर के बाजवूद चुनाव जीतकर गौरव ने अपनी पार्टी का भरोसा कायम रखा। गौरव गोगोई ने दिल्ली की इन्द्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी से बीटेक किया है और न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी से पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर्स की डिग्री प्राप्त की है। राजनीति में उतरने के पहले इन्होंने एयरटेल और 'प्रवाह' नाम का एनजीओ में काम किया है। गौरव के लेख सेंटर फॉर पीस एंड डेवलपमेंट स्टडीज द्वारा भी प्रकाशित किया जा चुका है। इन्हें वर्ष 2017 में फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे में श्रेष्ठ सांसद अवार्ड के लिए चुना गया था।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	अच्छा	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर गौरव गोगोई मजबूत श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

नेतृत्व

अभिषेक सिंह

ईमानदार छवि, विकासपरक सोच वाले युवा

छत्तीसगढ़ के इस युवा नेता की काबिलियत के चर्चे इस कदर हैं कि गुजरात में विधानसभा चुनाव के मद्देनज़र भारतीय जनता युवा मोर्चे ने इनको गुजरात की कमान सौंप दी। इस जिम्मेदारी को अभिषेक ने बाखूबी निभाया, अभिषेक सिंह राजनांदगाँव निर्वाचन क्षेत्र से बीजेपी के सांसद हैं। 5 मार्च 1981 को कवर्धा में जन्मे अभिषेक ने एनआईटी रायपुर से इंजीनियरिंग की है और मशहूर एक्सएलआरआई-ज़ेवियर स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट से एमबीए किया है।

लोकसभा चुनाव लड़ने के 6-7 साल पहले से अभिषेक बीजेपी का गढ़ माने जाने वाले राजनांदगांव और कवर्धा में सक्रिय रहे हैं। 2013 के विधानसभा चुनाव के दौरान ये रमन सिंह के चीफ मैनेजर थे। अपने कुशल नेतृत्व और प्रबंधन के दम पर इन्होंने राजनांदगांव और कवर्धा निर्वाचन क्षेत्रों में बीजेपी का कैंपेन चलाया। इस चुनाव में इन दोनों सीटों पर बीजेपी का प्रदर्शन शानदार रहा, साल 2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान बीजेपी जब राजनांदगांव लोकसभा सीट के लिए एक युवा चेहरे की तलाश कर रही थी तो उसकी तलाश अभिषेक सिंह पर आकर रुकी। 'सरल, सहज, दिल के नेक, राजनंदगांव का बेटा अभिषेक' नारे के साथ अभिषेक को चुनावी दंगल में उतारा गया। इस नारे ने सीधे-सरल छत्तीसगढ़वासियों के दिल को छुआ और उन्होंने अपने मुख्यमंत्री के बेटे को हाथों हाथ लिया, अभिषेक उच्च गुणवत्ता की शिक्षा, युवा सशक्तिकरण और खेलों के विकास पर ध्यान दे रहे हैं। कृषि और ग्रामीण विकास, मानव संसाधन प्रबंधन, शिक्षा, खेल, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और अर्थशास्त्र, ई-शासन और रणनीति, प्राथमिक शिक्षा का प्रचार पर इनका विशेष फोकस है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -
अनुभव -
दूरदर्शिता -
सक्रियता -
जनता से जुड़ाव -

प्रभाव -
संवाद क्षमता -
छवि -
नेतृत्व क्षमता -
लोकप्रियता -

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर अभिषेक सिंह नेतृत्व श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

इरादे

डॉ. जयकुमार जयवर्धन

जनता की सतत् सेवा को ही लक्ष्य बनाया

तमिलनाडु की राजनीति के नौजवान चेहरा जिसमें भविष्य की बहुत सारी संभावनाएं देखी जा रही हैं वे हैं डॉ. जयकुमार जयवर्धन। वैसे तो पेशे से डॉक्टर हैं मगर सियासत के सारे मर्ज और उनका इलाज भी बखूबी जानते हैं। तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता के पसंदीदा नेताओं में गिने जाने वाले डॉ। जयकुमार जयवर्धन चेन्नई दक्षिण से अन्ना द्रमुक मुनेत्र कड़गम के सांसद हैं। 2014 में जयललिता ने जब इनको लोकसभा का टिकट दिया तब उस वक्त वे जनरल मेडिसिन में स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहे थे।

डॉ. जयकुमार जयवर्धन चुनाव की वजह से इम्तिहान छोड़ा, अभियान में पूरी ताकत लगाई और जीत हासिल की। चुनाव जीतने के बाद जयवर्धन ने अपने आपको पूरी तरह राजनीति को समर्पित कर दिया है। वे अम्मा के विज़न 2023 को पूरा करने में लगे हुए हैं। इसके तहत वे युवा सशक्तिकरण और समाज कल्याण के कार्यक्रमों को बढ़ावा दे रहे हैं। हाल ही में इनको तमिलनाडु की दिवंगत मुख्यमंत्री जे जयललिता के नाम पर गठित एक मंच 'पुराची थलैवी अम्मा पेरावै' का संयुक्त सचिव नियुक्त किया गया है।

29 मई 1987 को चेन्नई में जन्मे जे. जयवर्धन ने श्री रामचंद्र मेडिकल कॉलेज और रिसर्च इंस्टीट्यूट से एमबीबीएस किया है। वे जनरल मेडिसिन में एमडी हैं और ये डिग्री उन्होंने सांसद बनने के बाद हासिल की। इनके पिता डी.जयकुमार चेन्नई से विधायक हैं। डी. जयकुमार साल 1991 से 1996 के बीच जयललिता की सरकार में मत्स्यायन मंत्री के अलावा एक साल तमिलनाडु असेंबली में स्पीकर भी रहे हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	अच्छा	नेतृत्व क्षमता -	अच्छा
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर डॉ. जयकुमार जयवर्धन इरादे श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

शोहरत ★★★★★

अभिषेक बनर्जी

युवाओं में नई शक्ति का संचार करते

अभिषेक बनर्जी पश्चिम बंगाल के युवाओं का चेहरा हैं। ये पश्चिम बंगाल की डायमंड हारबर सीट से आल इंडिया तृणमूल कांग्रेस के सांसद हैं और आल इंडिया तृणमूल युवा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। 7 नवम्बर 1987 में जन्मे अभिषेक बनर्जी ने नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्लानिंग एंड मैनेजमेंट से एमबीए किया है।

अभिषेक बनर्जी ने 2010 में 'युवा' नाम के गैर सरकारी संगठन से अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत की, जिसका लक्ष्य प्रतिभाशाली युवाओं को सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से राजनीतिक रूप से जागरुक बनाना था। 2011 के असेंबली इलेक्शन में अभिषेक ने कई रैलियाँ कीं और अपनी नेतृत्व क्षमता और कार्यकुशलता का परिचय दिया। वर्ष 2012 में अभिषेक बनर्जी को आल इंडिया तृणमूल यूथ कांग्रेस का अध्यक्ष बना दिया गया। अध्यक्ष बनते ही इन्होंने आल इंडिया तृणमूल यूथ कांग्रेस में ही युवा को मिला लिया। साल 2014 में अभिषेक बनर्जी पश्चिम बंगाल की डायमंड हारबर सीट से लोकसभा चुनाव जीत सांसद बने। अभिषेक बनर्जी मानवाधिकारों की रक्षा के लिए अपनी आवाज़ उठाते रहे हैं। इनका प्रयास है कि लोगों के बीच नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा मिले और समाज में शांति स्थापित हो।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	अच्छा	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	अच्छा	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर अभिषेक बनर्जी शोहरत श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

अनुभवी

धर्मेंद्र यादव

गरीबों की मदद ही राजनीति का मुख्य लक्ष्य

धर्मेंद्र यादव समाजवादी पार्टी का ऊर्जावान, कर्मठ, युवा चेहरा हैं। मात्र 36 साल की उम्र में लगातार तीसरी बार सांसद बनना इनकी एक बड़ी उपलब्धि है। धर्मेंद्र यादव उत्तरप्रदेश की बदायूं सीट से सांसद हैं। साल 2014 में हवा का रुख बीजेपी के पक्ष में होने के बावजूद ये सिर्फ धर्मेंद्र की कर्मठ छवि थी, जिसके बलबूते धर्मेंद्र ने बीजेपी के वागीश पाठक को पटखनी दी और 16वीं लोकसभा तक पहुंचे।

केवल 5 सांसदों के साथ 16 वीं लोकसभा पहुंची सपा के लिए किसी भी मुद्दे पर पार्टी की राय रखना अपने आप में एक चुनौती है लेकिन हर चुनौती से निबटने में धर्मेंद्र यादव को महारत हासिल है। चाहे सीसैट का मुद्दा हो या भूमि अधिग्रहण का या फिर इनटॉलेरेंस का, धर्मेंद्र ने बेबाकी के साथ अपनी पार्टी की आवाज़ संसद में उठायी है। 3 फरवरी 1979 को सैफई में पैदा हुए धर्मेंद्र यादव का राजनीतिक परिवार से ताल्लुक होने के नाते राजनीति में आना तो तय था लेकिन कब इसका फैसला नियति ने किया। दरअसल हुआ यूँ कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान एक बहुत बड़ा छात्र आंदोलन हुआ जिसमें धर्मेंद्र के सारे सीनियर जेल चले गए और तब उन्होंने बढ़-चढ़ कर इस आंदोलन में हिस्सा लिया इसी वक़्त से धर्मेंद्र का सक्रिय राजनीति में पदार्पण हुआ। इसी यूनिवर्सिटी से धर्मेंद्र ने लॉ में स्नातक और पॉलिटिकल साइंस में मास्टर्स किया है।साल 2003 में सक्रिय राजनीति में धर्मेंद्र ने कदम रखा और तब से कभी पीछे मुड़कर नही देखा। धर्मेंद्र द्वारा अपने निर्वाचन क्षेत्र में करवाए गए काम का लोहा विपक्षी भी मानते हैं। सांसद धर्मेंद्र के खाते में क्षेत्र विकास के लिए किये गये ढेरों कार्य दर्ज हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	अच्छा	नेतृत्व क्षमता -	अच्छा
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

बेहतरीन   अच्छा   सामान्य   कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर धर्मेंद्र यादव अनुभवी श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

कलवाकुन्तल कविता

सुनहरे भविष्य का विजन रखने वाली युवा नेत्री

कला और संस्कृति के माध्यम से समाज को एक धागे में पिरोया जा सकता है', ऐसा करके दिखाया है तेलंगाना से सांसद कलवाकुन्तल कविता ने। अपने प्रदेश की जनता के हक के लिए पूरे दमखम से अपनी आवाज़ बुलंद करने वालीं के.कविता तेलंगाना से पहली महिला सांसद हैं। 13 मार्च को आंध्र प्रदेश के करीमनगर में जन्मीं कलवाकुन्तल कविता की तेलंगाना आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

कंप्यूटर साइंस में बीटेक करने के बाद आगे की पढ़ाई करने के लिए कविता अमेरिका चली गयीं। साल 2004 में कविता अमेरिका से लौटकर तेलंगाना आन्दोलन का हिस्सा बनीं। तेलंगाना के लोगों का अपनी कला और संस्कृति के प्रति लगाव देखकर कविता ने महसूस किया कि कला और संस्कृति ही तेलंगाना के लोगों को एकजुट कर सकती है। अगस्त 2006 में कविता ने तेलंगाना जाग्रुति नाम के एनजीओ की शुरुआत की। इस संस्था का उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से तेलंगाना के लोगों में गर्व और एकता को जागृत करना था। कविता ने इस संस्था के माध्यम से बतुकम्मा त्योहार एक अहिंसात्मक विरोध के रूप में मनाना शुरू किया ताकि तेलंगाना के लोगों के लिए समानता और न्याय को बढ़ावा मिले। आज ये त्योहार दुनिया भर के 30 देशों में मनाया जाता है।कविता के नेतृत्व में युवाओं को रोज़गार मुहैया करवाने के उद्देश्य से तेलंगाना जाग्रुति ने जगह-जगह स्किल ट्रेनिंग सेण्टर खोले। तेलंगाना राज्य आंदोलन के दौरान उन्हें कई बार गिरफ्तार भी किया गया। इनका ये संघर्ष इन्हें जनता के करीब ले आया और 2014 में तेलंगाना राज्य बनने के बाद कविता निज़ामाबाद सीट से रिकॉर्ड मतों से जीतकर संसद पहुँचीं।के.कविता विभिन्न मजदूर और ट्रेड संगठनों से भी जुड़ी हुई हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	अच्छा	संवाद क्षमता -	अच्छा
दूरदर्शिता -	सामान्य	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	अच्छा
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	अच्छा

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर कलवाकुन्तल कविता बेहतर श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

मशहूर

नितेश राणे

महाराष्ट्र की राजनीति का आक्रामक युवा चेहरा

आक्रामक अंदाज़ और विकास वादी नजरिया वाले नीतेश नारायण राणे महाराष्ट्र में सरोकार की राजनीति करने के लिए जाने जाते हैं। समाज के उत्थान के लिए काम करने का जज़्बा उनको युवा नेताओं की एक अलग ही पंक्ति में खड़ा करता है। 36 वर्षीय नीतेश राणे एक एमबीए प्रोफेशनल हैं। इन्होंने यूनाइटेड किंगडम से पढ़ाई की है। भारत लौटकर नीतेश राजनीति में सक्रिय हुए।

सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि के चलते इन्होंने 'स्वाभिमान संगठन' नाम के एक गैर सरकारी संगठन की नींव डाली जो महाराष्ट्र विशेषकर मुंबई में सामजिक सरोकार से जुड़े मुद्दों पर काम करता है। इनके एनजीओ ने कई जॉब फेयर आयोजित करवाए हैं। अक्टूबर 2011 में स्वाभिमान संगठन द्वारा कामगार मैदान में आयोजित जॉब फेयर ने गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था। इस जॉब फेयर में 25,000 बेरोजगारों को नौकरी दी गयी थी। इसके अलावा महाराष्ट्र में युवाओं को घर बैठे नौकरी देने के उद्देश्य से इन्होंने 'नौकरी एक्सप्रेस' के नाम से एक अनूठी पहल की थी। साल 2012 में ही इन्होंने 'सिंधुदुर्ग टूर गाइड' के नाम से एक ट्रेनिंग प्रोग्राम चलाया था जिसका उद्देश्य सिंधुदुर्ग जिले के युवाओं को टूरिज्म इंडस्ट्री में रोज़गार के अवसर प्रदान करना था। वर्ष 2014 में इन्होंने कणकल्वी विधानसभा सीट से चुनाव से लड़ा और जीतकर विधानसभा पहुंचे।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	अच्छा	संवाद क्षमता -	सामान्य
दूरदर्शिता -	सामान्य	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	अच्छा	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	अच्छा

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर नितेश राणे मशहूर श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

असरदार

मुकेश सहनी

हौसले की उड़ान से बनाई पहचान

कहते हैं, अगर कोई काम दिल से किया जाए तो उसका पूरा होना तय है। मुकेश सहनी इस देशज समझ के जीते-जागते उदाहरण हैं। गरीबी में बचपन बिताने वाले मुकेश ने अपने पुरुषार्थ के बल पर मुंबई में जाकर कंपनी बनाई और उसे एक बड़े मुकाम तक पहुंचाया। मगर मन में रची-बसी मिट्टी की सुगंध उन्हें अपनों के बीच वापस खींच लाई। दरभंगा जिले के सुपौल से मैट्रिक पास करने के बाद जब मुकेश सहनी ने वर्ष 1999 में मुंबई की ओर अपना रुख अपने सपने को पूरा करने के लिए किया

मुकेश सहनी ने दिन-रात कड़ी मेहनत की। इस दौरान दो साल की दिन रात की कड़ी मेहनत से इन्होने बहुत कुछ सीखा। इस बीच अचानक वर्ष 2001 में फिल्म 'देवदास' की शूटिंग में मजदूरी करने का काम मिल गया। फिल्म की मायानगरी में लेबर से शुरूआत कर मुकेश अपनी दूरदर्शिता के चलते लेबर कांट्रेक्टर बन गए। फिर धीरे-धीरे फिल्मों का सेट बनाने के कांट्रेक्ट लेने लगे। इस तरह काम के लिए समर्पित मुकेश ने आगे चलकर सिने आर्ट इंटरप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड नाम से एक कंपनी बनाई।

मुकेश सहनी मुंबई में रहकर लगातार सफलता की सीढ़ियां चढ़े, पर अपनों के साथ रहने की चाह ने मुकेश का एक दिन अचानक रुख बदला और वे गांव की ओर वापस लौट आए। मुकेश ने 2015 में पटना के गांधी मैदान में पूरे बिहार की यात्रा कर लोगों को एकजुट किया। बड़ी संख्या में लोगों की इस भागीदारी के चलते इनकी कार्यक्षमता को देखकर इन्हें किसी ने गांधी तो किसी ने निषाद समुदाय से उठने वाली आंधी कहा, ये इनके हौसले की उड़ान ही है। मुकेश राज्य की भावी राजनीति के एक बड़े चेहरे हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्ज्वल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	बेहतरीन
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	बेहतरीन	छवि -	बेहतरीन
सक्रियता -	बेहतरीन	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	बेहतरीन	लोकप्रियता -	बेहतरीन

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर मुकेश सहनी असरदार श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

सरोकार

चंद्रशेखर आज़ाद

दलित आक्रोश और विद्रोह का नया नाम

बाबा साहब के विचारों को जीवन में आत्मसात कर अपनी जाति को समाज में सम्मान दिलाने के लिए प्रतिबद्ध चंद्रशेखर आज़ाद एक दलित एक्टिविस्ट हैं। पेशे से वकील चंद्रशेखर भीम आर्मी के संस्थापक हैं। ये खुद को "आजाद कहलाना पसंद करते है, चंद्रशेखर आज़ाद साल 2015 में पहली बार चर्चा में तब आये थे जब इन्होंने उत्तर प्रदेश के सहारनपुर के चटमलपुर के पास स्थित अपने गाँव घडकौली के बाहर एक बोर्ड लगा दिया जिस पर लिखा था ' द ग्रेट चमार्स भीम राव अंबेडकर ग्राम घडकौली आपका हार्दिक अभिनंदन करता है'।

चंद्रशेखर के मुताबिक एक दिन पिता की बीमारी के कारण वे सहारनपुर के हॉस्पिटल गये। वहां पर वे दलितों की असली परेशानियों से रूबरू हुए। इसके बाद ही चंद्रशेखर एक दलित एक्टिविस्ट बन गये और साल 2015 में उन्होंने भीम आर्मी एकता मिशन नाम के संगठन की स्थापना की, जो दलितों के लिए पढ़ाई व अन्य सेवाएं प्रदान करने जैसे काम करती है। यूपी सहित देश के सात राज्यों में फैली इस संस्था में हजारों सदस्य जुड़े हुए हैं। पश्चिम उत्तर प्रदेश में भीम आर्मी का खासा प्रभाव है, 2017 में सहारनपुर में जातीय दंगा फैलाने के आरोप में राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत जेल भेजा गया था। चंद्रशेखर की रिहाई की मांग को लेकर भीम आर्मी ने लखनऊ से दिल्ली तक प्रदर्शन किया था। 14 सितम्बर 2018 को इनको जेल से समय से पहले रिहा कर दिया गया। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में इनके नेतृत्व में भीम आर्मी की मजबूती बढ़ती जा रही है

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	अच्छा	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	कोई राय नही	संवाद क्षमता -	बेहतरीन
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	अच्छा	नेतृत्व क्षमता -	बेहतरीन
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	अच्छा

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर चंद्रशेखर आज़ाद सरोकार श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

सफल ★★★★★

अनुपम हाजरा

शिक्षा और विकास के लिए समर्पित

शिक्षा और विकास की मशाल अपने हाथों में थामे 36 वर्षीय युवा नेता अनुपम हाजरा समाज को अपने ज्ञान के प्रकाश से रोशन करना चाहते हैं। ये विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन में सामाजिक कार्य विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं और पश्चिम बंगाल की बोलपुर लोकसभा से तृणमूल कांग्रेस के सांसद हैं।

अनुपम सोशल वर्क एजुकेटर और डेवलपमेंट प्रोफेशनल हैं। अनुपम के पास बीरभूम जिले में ग्रामीण विकास और स्वच्छता प्रणाली की काफी व्यावहारिक जानकारी थी यही कारण था कि तृणमूल कांग्रेस ने इन्हें 2014 के लोकसभा चुनाव में बोलपुर सीट के लिए उम्मीदवार चुना।इन्होंने चुनाव जीता और 16वीं लोकसभा पहुंचे। 30 मई 1982 में जन्मे अनुपम हाजरा अपने परिवार के पहले ऐसे व्यक्ति हैं जो राजनीति में उतरे हैं। अनुपम ने विश्व भारती यूनिवर्सिटी से सोशल वर्क में परास्नातक किया है और असम यूनिवर्सिटी से रूरल सैनिटेशन में पीएचडी की है। साल 2005 से अनुपम कई गैर लाभकारी क्षेत्रों से जुड़े रहे हैं। इन्होंने देशभर में विभिन्न विकास संगठनों के साथ काम किया है। ये विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों की विजिटिंग फैकल्टी हैं ।सांसद बनने के बाद अनुपम, बोलपुर में सैनिटेशन सिस्टम सुधारने का काम ज़ोरों पर कर रहे हैं। अनुपम हाजरा शिक्षाविदों से परामर्श लेकर मौजूदा शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए प्रयासरत हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	सामान्य
दूरदर्शिता -	अच्छा	छवि -	सामान्य
सक्रियता -	सामान्य	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	सामान्य	लोकप्रियता -	सामान्य

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर अनुपम हाजरा सफल श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

प्रयत्नशील

श्रीकांत एकनाथ शिंदे

बेहतरीन संगठनकर्ता की पहचान

4 फरवरी 1987 को जन्मे श्रीकांत शिंदे शिवसेना के आधुनिक चेहरा माने जाते है , इन्होने 2014 के लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र के कल्याण निर्वाचन क्षेत्र से जीत हासिल कर लोकसभा तक का सफर तय किया है । अपने पिता को आदर्श मानने वाले श्रीकांत पेशे से ओर्थोपेडिक सर्जन हैं। श्रीकांत हमेशा समाज की सेवा करना चाहते हैं।

2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान, जब शिवसेना एक शिक्षित उम्मीदवार और एक नया चेहरा तलाश रही थी, श्रीकांत एकनाथ शिंदे से चुनाव लड़ने के बारे में पूछा गया, और उन्होंने हाँ कर दिया। इस तरह उनके राजनीतिक सफ़र की शुरुआत हुई। लोकसभा चुनाव के वक़्त वे ओर्थोपेडिक्स में स्नाकोत्तर कर रहे थे। चुनाव के एक महीने बाद उन्होंने परीक्षा दी और ओर्थोपेडिक सर्जन बने। श्रीकांत एकनाथ शिंदे ने राजनीति को बारीकी से देखा-समझा है। क्योंकि पिता राजनीति से जुड़े रहे हैं, महाराष्ट्रा के युवाओं की तरह, शिवसेना सुप्रीमो बालासाहेब ठाकरे के भाषणों ने श्रीकांत पर भी स्थायी प्रभाव छोड़ा।

सांसद बनने के बाद श्रीकांत एकनाथ शिंदे ने अपने निर्वाचन क्षेत्र का चेहरा बदलने की दिशा में काम किया है। उन्होंने कई परियोजनाओं को मंजूरी दिलवाई है जिनमें रेलवे और जलमार्ग शामिल हैं। श्रीकांत एकनाथ शिंदे का मानना है कि राजनीति में युवा रक्त, नए विचार और सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है ताकि लाखों युवा भारतीयों की आकांक्षाओं को आवाज़ मिल सके।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	अच्छा
अनुभव -	बेहतरीन	संवाद क्षमता -	अच्छा
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	सामान्य
सक्रियता -	सामान्य	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	अच्छा

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

FAME INDIA

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर श्रीकांत एकनाथ शिंदे प्रयत्नशील श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

जागरूक

सावित्री ठाकुर

जनसरोकार के कार्य के लिये प्रसिद्ध

मध्यप्रदेश के धार निर्वाचन क्षेत्र से बीजेपी की सांसद सावित्री ठाकुर की ज़िन्दगी का सफ़र बहुत मुश्किलों भरा रहा है। घर में चार बहनों में सबसे बड़ी थीं। बहुत कम उम्र में परिवार की जिम्मेदारी इनके कन्धों पर आ गयी इसलिए 10वीं के बाद इनको पढ़ाई छोड़नी पड़ी। सावित्री ने जो नहीं छोड़ा वो था जीने का जज़्बा और दूसरों के लिए कुछ कर गुजरने की चाहत। परिवार पालने के लिए पीसीओ बूथ चलाया। अपने साथ-साथ दूसरी आदिवासी महिलाओं को भी आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए स्वयं सेवा संस्थाएं बनायीं।

इस दौरान ये आरएसएस की विचाधारा से प्रभावित हुईं और समाजसेवा को ही जीवन का ध्येय बना लिया। इस कट्टर आरएसएस कार्यकर्ता की लोकप्रियता जब बीजेपी तक पहुंची तो पार्टी ने इन्हें जिला पंचायत चुनाव में उतारने का फैसला किया। इस चुनाव में सावित्री ने जीत हासिल की और मात्र 26 साल की उम्र में जिला पंचायत अध्यक्ष बन गयीं। राजनीतिक सफ़र भी सावित्री के लिए कम मुश्किलों भरा नहीं था। सबसे योग्य उम्मीदवार होने के बावजूद इस चुनाव के बाद लगभग एक दशक तक सावित्री ठाकुर को विधानसभा या लोकसभा का टिकट नहीं मिला। कर्म में विश्वास रखने वाली सावित्री ने 'कर्म कर, फल की चिंता मत कर' सिद्धांत पर अपना काम जारी रखा। साल 2014 में आखिरकार भाजपा ने इनको धार सीट से लोकसभा का टिकट दिया। इस सीट पर भाजपा ने सारे रिकॉर्डों को ध्वस्त करते हुए अब तक के इतिहास की सबसे बड़ी जीत हासिल की। सावित्री ठाकुर अपने क्षेत्र में रेल कनेक्टिविटी में सुधार, युवाओं को रोज़गार के अवसर दिलवाने और मेडिकल सुविधाओं को अपग्रेड करने की दिशा में काम कर रही हैं। गाँवों की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए बहुत काम कर रही है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	अच्छा	प्रभाव -	सामान्य
अनुभव -	अच्छा	संवाद क्षमता -	अच्छा
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	सामान्य	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	सामान्य

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर सावित्री ठाकुर जागरूक श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

उत्कृष्ट
★★★★★

दिव्या स्पंदना

कांग्रेस के सोशल मीडिया की धार

आजकल कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी सोशल मीडिया के ट्वीट में आक्रामकता साफ़ नजर आ रही है। सोशल मीडिया पर इनकी इमेज में तेजी से सुधार हो रहा है। इस इमेज इम्प्रूवमेंट के पीछे हाथ है कांग्रेस की सोशल मीडिया हेड दिव्या स्पंदना उर्फ़ राम्या का। इन दिनों सोशल मीडिया पर कांग्रेस की आक्रामक रणनीति को जमकर सराहा जा रहा है और राम्या के दिमाग का लोहा उनके विरोधियों भी मान रहे हैं। साल 2012 में राम्या इंडियन यूथ कांग्रेस से जुड़ीं।

कांग्रेस के टिकट पर 2013 में उन्होंने कर्नाटक के मांड्या क्षेत्र से लोकसभा का उपचुनाव लड़ा और जीत हासिल की। दिव्या स्पंदना का जन्म 29 नवंबर, 1982 को कर्नाटक के बेंगलुरु में हुआ था। दिव्या की मां रंजीता कांग्रेस पार्टी की दिग्गज नेता रही हैं। दिव्या को शुरू से ही अभिनेत्री बनने का शौक था। मशहूर अदाकारा दिव्या उर्फ राम्या कन्नड़ और तमिल के अलावा कई तेलुगु फिल्मों में भी काम कर चुकी हैं। राम्या को उनके अभिनय के लिए कई अवार्ड भी मिल चुके हैं।

2014 लोकसभा चुनाव में एक बार फिर उन्हें कांग्रेस की ओर से टिकट दिया गया लेकिन वे चुनाव हार गईं। मई 2017 में दिव्या को कांग्रेस की सोशल मीडिया की कमान सौंपी गई और उन्होंने इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाया है। पार्टी के और पार्टी प्रमुख के ट्विटर अकाउंट पर क्या-क्या जाएगा यह सब राम्या ही तय करती हैं। वे ट्विटर हैंडल भी संभालती हैं और हर गतिविधि पर पैनी नजर रखती हैं। आज के समय में सोशल मीडिया को राजनीतिक पार्टियाँ हथियार की तरह इस्तेमाल कर रही हैं, ऐसे में राम्या ने कांग्रेस के सोशल मीडिया की धार बढ़ा ली है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	अच्छा	प्रभाव -	सामान्य
अनुभव -	अच्छा	संवाद क्षमता -	अच्छा
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	सामान्य	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	सामान्य	लोकप्रियता -	सामान्य

बेहतरीन   अच्छा   सामान्य   कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर दिव्या स्पंदना उत्कृष्ट श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

सक्रिय

नूपुर शर्मा

दिल्ली की मुखर आवाज़

हाज़िर जवाबी और बेबाक अंदाज़ ही नूपुर की पहचान है। इनके बोलने का अंदाज़ और भाषा पर मज़बूत पकड़ विरोधी को भी तारीफ़ के लिए मजबुर करते हैं। पेशे से सुप्रीम कोर्ट की वकील नूपुर शर्मा बीजेपी का युवा चेहरा हैं। साल 2015 में दिल्ली विधानसभा चुनाव के दौरान बीजेपी ने अरविंद केजरीवाल के खिलाफ नूपुर शर्मा को नई दिल्ली सीट से चुनाव लड़वाया था। इस चुनाव में नूपुर को हार का सामना करना पड़ा लेकिन इनका हौसला कम नहीं हुआ।

नूपुर शर्मा अपने कॉलेज के दिनों से राजनीति में सक्रिय रही हैं। इन्होंने साल 2008 में दिल्ली यूनिवर्सिटी स्टूडेंट यूनियन (डूसू) के अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ा था और 6 सालों से दिल्ली यूनिवर्सिटी में हार का सामना कर रही एबीवीपी को जीत दिलाई थी। 23 अप्रैल 1985 को जन्मीं नूपुर शर्मा की प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड, नयी दिल्ली से हुई है। इन्होंने दिल्ली यूनिवर्सिटी से लॉ की डिग्री ली है। इसके बाद ये एलएलएम करने के लिए लंदन चली गयीं और लंदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स से विधि में पोस्ट ग्रेजुएशन की डिग्री ली। लन्दन से लौटने पर नूपुर वकालत के साथ-साथ राजनीति में भी सक्रिय रहीं। राजनीति में बढ़ती सक्रियता के बीच 2009 में नूपुर को भारतीय जनता की युवा मोर्चा की राष्ट्रीय वर्किंग कमेटी में शामिल किया गया और साल 2012 में नूपुर को बीजेपी युवा मोर्चा के मीडिया सेल का इंचार्ज बनाया गया। हिन्दुस्तान टाइम्स ने साल 2009 में भारत की 10 इंस्पिरेशनल महिलाओं में नूपुर शर्मा का भी नाम शामिल किया था।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्ज्वल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	सामान्य
अनुभव -	अच्छा	संवाद क्षमता -	अच्छा
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	सामान्य	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	सामान्य	लोकप्रियता -	सामान्य

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर नूपुर शर्मा सक्रिय श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

जज्बा

राजेशभाई नारनभाई चुडासमा

गुजरात की युवा ब्रिगेड का चमकदार सितारा

गुजरात की युवा ब्रिगेड में से एक चमकदार सितारा राजेशभाई नारनभाई चुडासमा हैं। 2014 के लोकसभा चुनाव में राजेश चुडासमा गुजरात के सबसे युवा उम्मीदवार थे। ये जूनागढ़ से सांसद हैं, इससे पहले राजेश चुडासमा जूनागढ़ के मंगरौल से विधायक थे।

राजेशभाई चुडासमा के चाचा हीरा चुडासमा तीन दशकों से भी ज्यादा चोरवाड म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष रहे हैं। अपने चाचा की प्रेरणा से राजेश ने 2012 का विधानसभा चुनाव लड़ा

अप्रैल 1982 में गुजरात के जूनागढ़ में जन्मे राजेश चुडासमा कॉमर्स में स्नातक हैं। वे मोंघीबेन रामभाई चैरिटेबल ट्रस्ट और श्री लक्ष्मीनारायण एजुकेशन एंड चैरिटेबल ट्रस्ट चलाते हैं। उनके क्षेत्र के लोग उनसे आसानी से मिल सकते हैं और अपनी समस्याएं उन तक पहुंचा सकते हैं। राजेशभाई जूनागढ़ में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं। राजेशभाई का मानना है कि पर्यटन बढ़ने से स्थानीय व्यापार और नौकरियों को बढ़ावा मिलेगा।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्वल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	अच्छा	प्रभाव -	सामान्य
अनुभव -	सामान्य	संवाद क्षमता -	सामान्य
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	सामान्य	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	अच्छा	लोकप्रियता -	सामान्य

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर राजेशभाई नारनभाई चुडासमा जज्बा श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

युवा

विक्रमादित्य सिंह

राजनीति में पिता के सपनों को पूरा कर रहे

अंग्रेजी में एक कहावत है "बोर्न विथ सिल्वर स्पून" ये कहावत हिमाचल प्रदेश की शिमला रूरल विधानसभा सीट से कांग्रेस के विधायक विक्रमादित्य सिंह के ऊपर एकदम सटीक बैठती है। विक्रमादित्य बुशहर राजघराने से ताल्लुक रखते हैं। ये हिमाचल प्रदेश के सभी विधायकों में से सबसे अमीर विधायक हैं। इनके पिता वीरभद्र सिंह 6 बार हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। माँ प्रतिभा सिंह भी सांसद रह चुकी हैं। प्रदेश का यूथ आइकॉन माने जाने वाले 29 वर्षीय विक्रमादित्य हिमाचल प्रदेश विधानसभा के सबसे युवा और लोकप्रिय विधायक हैं।

17 अक्टूबर , 1989 में जन्मे विक्रमादित्य ने शुरुआती शिक्षा शिमला के बिशप कॉटन स्कूल से हासिल की है। साल 2007 में इन्होंने दिल्ली यूनिवर्सिटी के हंसराज कॉलेज से हिस्ट्री ऑनर्स में बीए की डिग्री हासिल की है और सेंट स्टीफेंस से लॉ की पढ़ाई की है। कॉलेज के बाद ये हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमिटी से जुड़े। साल 2013 से विक्रमादित्य हिमाचल प्रदेश यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष हैं। साल 2017 के विधानसभा चुनाव में शिमला ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र से दावेदारी के साथ इन्होंने सक्रिय राजनीति में कदम रखा। इस चुनाव में शिमला रूरल सीट पर कब्ज़ा जमाया। पिता से इन्होंने राजनीति की बारीकियां सीखी हैं। इनका पूरा ध्यान शिमला ग्रामीण क्षेत्र के विकास पर है।

राजनीति के अलावा विक्रमादित्य सिंह की खेलों में खासी रुचि है। विक्रमादित्य हिमाचल प्रदेश स्पोर्ट्स, कल्चर ऐंड एन्वायरमेंट असोसिएशन के नाम से एक एनजीओ भी चलाते है। ये एनजीओ पर्यावरण जागरुकता के साथ समय-समय पर क्रिकेट और वॉलीबॉल टूर्नामेंट का भी आयोजन करता है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	बेहतरीन	प्रभाव -	सामान्य
अनुभव -	अच्छा	संवाद क्षमता -	कोई राय नही
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	सामान्य	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	सामान्य	लोकप्रियता -	सामान्य

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर विक्रमादित्य सिंह युवा श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

विरासत

जयवर्धन सिंह

युवाओं को तरक्की से जोड़ने को प्रयासरत्त

मध्यप्रदेश में कांग्रेस का युवा चेहरा जयवर्धन सिंह यूथ आइकॉन माने जाते हैं। ये मध्यप्रदेश की चौदहवीं विधानसभा के सबसे युवा विधायक हैं। राघोगढ़ रियासत से ताल्लुक रखने वाले जयवर्धन सिंह का जन्म 9 जुलाई 1986 को इंदौर, मध्यप्रदेश में हुआ था।

इनकी प्रारंभिक शिक्षा दून स्कूल, देहरादून से हुई है। इन्होंने दिल्ली के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से बीकॉम ऑनर्स करने के बाद न्यूयॉर्क की कोलंबिया यूनिवर्सिटी से पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन डेवलपमेंट प्रैक्टिस में एमबीए किया है। साल 2013 में एमबीए कंप्लीट करके स्वदेश लौटते ही जयवर्धन ने जून 2013 में कांग्रेस पार्टी ज्वाइन कर ली। इसी साल हुए मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने इन्हें राघोगढ़ विधानसभा सीट से मैदान में उतारा। जयवर्धन जीतकर पहली बार विधानसभा पहुंचे। ये जनता के बीच जाकर उनकी समस्या सुनते हैं और उसको दूर करने का यथासंभव प्रयास करते हैं।इसके चलते ये अपने क्षेत्र की जनता के बीच काफी लोकप्रिय हैं। जयवर्धन सिंह को 'आदर्श युवा विधायक' के पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।इन्होंने राज्य स्तर पर कम उम्र में एक जनप्रतिनिधि के तौर पर सशक्त संसदीय परंपराओं का अनुसरण करते हुए अपने उत्कृष्ट कार्यों से समाज में गहरी छाप छोड़ी है।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्वल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	अच्छा	प्रभाव -	सामान्य
अनुभव -	सामान्य	संवाद क्षमता -	सामान्य
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	अच्छा
सक्रियता -	सामान्य	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	सामान्य	लोकप्रियता -	सामान्य

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर जयवर्धन सिंह विरासत श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन | अच्छा | सामान्य | कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

कर्तव्यनिष्ठ

हरिंदर पाल सिंह चंदूमाजरा

पंजाब में विपक्ष का प्रभावी चेहरा

जनता की समस्याओं को समझकर उनको दूर करने का हरसंभव प्रयास करना एक नेता का कर्तव्य होता है। इसी के चलते हरिंदर पाल ने मात्र 38 साल की उम्र में पंजाब में प्रभावशाली युवा नेता के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

28 फरवरी 1980 को पटियाला के चंदूमाजरा गाँव में जन्मे पेशे से इंजिनियर हरिंदर पाल ने क़ानून की पढ़ाई भी की है। ये पंजाब सहकारी आन्दोलन से नेता के रूप में उभरे और अपने गांव के सहकारी समिति के अध्यक्ष बने। इसके बाद कई स्थापित नेताओं को हराकर सेंट्रल कॉपरेटिव बैंक, पटियाला के मैनेजिंग डायरेक्टर बने। इनकी काबिलियत को देखते हुए वर्ष 2017 में शिरोमणि अकाली दल ने इन्हें पंजाब की सनौर विधानसभा सीट का इंचार्ज बना दिया। सनौर वही सीट थी जिससे चुनकर साल 1985 में इनके पिता प्रो। प्रेम सिंह चंदूमाजरा पहली बार पंजाब विधानसभा पहुंचे थे। इस सीट पर पिछले कई सालों से कांग्रेस का कब्ज़ा था लेकिन हरिंदर पाल ने हार नहीं मानी। वे सनौर की जनता की सेवा करने में जी-जान से जुट गये। हरिंदर पाल सिंह चंदूमाजरा की लोकप्रियता बढ़ते देख अकाली दल ने विधानसभा चुनाव में इन्हें इस सीट से उम्मीदवार घोषित कर दिया और ये पहली बार पंजाब विधानसभा पहुंचे। वर्तमान ने हरिंदर पाल सिंह पंजाब विधानसभा में विरोधी दल के सक्रिय सदस्य हैं। जनता के बीच इनकी पहचान एक जुझारू नेता के रूप में है। ये निर्भीक होकर जनता के हक़ की आवाज़ बुलंद करते नज़र आते हैं।

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट के युवा 40@40 उज्जवल सितारे 2018 के सर्वे में

योग्यता -	अच्छा	प्रभाव -	सामान्य
अनुभव -	सामान्य	संवाद क्षमता -	सामान्य
दूरदर्शिता -	कोई राय नही	छवि -	सामान्य
सक्रियता -	सामान्य	नेतृत्व क्षमता -	सामान्य
जनता से जुड़ाव -	सामान्य	लोकप्रियता -	सामान्य

इन दस बिंदुओं पर किये गये आंकलन के आधार पर हरिंदर पाल सिंह चंदूमाजरा कर्तव्यनिष्ठ श्रेणी में प्रमुख स्थान पर है

बेहतरीन अच्छा सामान्य कोई राय नही

सर्वे स्रोत :- विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15000 की राय पर आधारित

भरोसे के १०० वर्ष

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया **Union Bank of India**

अच्छे लोग, अच्छा बैंक — Good people to bank with

भारतीय बैंकिंग कोड एवं मानक बोर्ड के सदस्य — Member of Banking Codes & Standards Board of India

Proud to be associated with

Helpline Nos.: 1800 208 2244 / 1800 22 2244 (Toll free no.) **080 2530 0175** (Chargeable)
+91 80 2530 2510 (for NRIs) | **www.unionbankofindia.co.in**

Connect with us: **@unionbankofindia** **@UnionBankTweets**

@UnionBankInsta YouTube **UnionBankofIndiaUtube** **Unionbankofindia**

नयी सोच व जोश वाले उज्जवल सितारे

लोकतंत्र में राजनीति और राजनेताओं की भूमिका सबसे अहम है. प्रतीत होता है कि युवा राजनेता देश को बेहतर बनाने में सबसे अधिक योगदान दे सकते हैं. वर्षों पहले सन् 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पार्टी की कमान 40 वर्षीय जवाहर लाल नेहरू के हाथों सौंपी गयी जिसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं भागीदारी के लिये एक नयी अलख जगा दी थी. तब गाँधी जी ने देश के युवाओं से कहा था 'नेहरू का कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पद के लिये चुना जाना इस बात का प्रमाण है कि देश युवाओं पर भरोसा करता है. भारत के युवाओं को आगे आना होगा.'

इसका खासा असर भी हुआ. ये वो दौर था जब बड़ी संख्या में युवा शक्ति सामने आयी.

आज देश की 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है. युवा शक्ति के मामले में भारत पूरे विश्व में सबसे समृद्ध राष्ट्र है. वर्तमान युग के 'कूल ड्यूड' कहे जाने वाले युवा सामाजिक विषयों पर जानकारी के साथ साथ आर्थिक विषयों की भी अच्छी खोज खबर रखते हैं. ये उद्यमी युवा ही हैं जिन्होंने स्टार्टअप कंपनियों के द्वारा देश में नये रोजगारों के सृजन को बढ़ावा दिया है. वहीं दूसरी तरफ चुनावी राजनीति को लेकर एक नयी सोच-समझ पैदा हुई है. आज का भारत युवाओं के राजनीति में दिलचस्पी लेने के जिस अधार पर खड़ा है उसकी एक मजबूत शुरुआत एक-डेढ़ दशक पहले से मानी जा सकती है

आगे चल कर राजनीति में रुचि और इसमें शामिल होने वाले इच्छुक युवाओं की एक नयी लहर अन्ना के आन्दोलन के बाद देखने को मिली. नये इरादे के साथ बड़ी संख्या में युवा शक्ति राजनीति में आगाज़ कर रही है. राज्य की राजनीति से लेकर संसद के गलियारे तक युवा शक्ति साफ तौर पर दस्तक दे रही है. कई युवा चेहरे हैं जो भारतीय राजनीति में जोश-ओ-खरोश और जज्बे के साथ एक सकारात्मक काम कर रहे हैं. ये बात दीगर है कि इसमें कई युवा ऐसे हैं जो नयी सोच के साथ विरासत में मिली राजनीति के द्वारा नये मानक गढ़ रहे हैं तो कई ऐसे हैं जिन्होंने जुझारू राजनैतिक द्वार से प्रवेश पाया है और अपने बूते पराक्रम दिखा रहे हैं. युवा अपनी नयी सोच, नये जोश व उत्कृष्ट आर्थिक कार्यक्रमों द्वारा देश को नयी ऊंचाइयों पर ले जाने में सक्षम हैं, क्योंकि वे अपेक्षाकृत ईमानदार होते हैं. भ्रष्टाचार मुक्त, विकासोन्मुख, शुचितापूर्ण, भेदभाव मुक्त समाज वाला देश बनाना है तो इसे युवा शक्ति ही सार्थक कर सकती है. हमने एशिया पोस्ट सर्वे के द्वारा देश के उज्जवल सितारों के तौर पर ऐसे से ही प्रमुख युवा राजनेताओं को सामने लाने का प्रयास किया है.

संजय पाठक
(लेखक - वरिष्ठ पत्रकार है)

बेटे को घड़ी गिफ़्ट करनी है?
पूरा परिवार साथ खाना खाए।

साथ खाना खाएं और सालाना गैस बिल पर 1,000* रुपये तक बचाएं।

एकसाथ खाने से खाने को बार–बार गरम नहीं करना पड़ता, जिससे आपका सिलिंडर ज़्यादा दिन चलता है और आप सालाना 1,000* रुपये तक बचा सकती हैं। अब इस पैसे से आप बेटे को एक नई घड़ी गिफ़्ट करें या फिर इसे बचत समझें, आख़िर बात तो एक ही है ना।

गैस बचाने के कुछ और आसान तरीके:

1. फ्रिज से निकले खाद्य पदार्थों को सामान्य तापमान पर आने के बाद ही पकाएं।
2. बर्नर हमेशा साफ़ रखें।
3. खाना पकाने के लिए प्रेशर कुकर का इस्तेमाल करें।

अधिक जानकारी के लिए विज़िट करें www.pcra.org या कॉल करें 011–26198809

ब ईंधन
चा धन
यें पर्यावरण

*बचत सिर्फ़ सूचनात्मक है। वास्तविक बचत सुझावों के वास्तविक इस्तेमाल और अन्य मापदंडों पर निर्भर करेगी।

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय
भारत सरकार

पीसीआरए

पेट्रोलियम संरक्षण अनुसंधान संघ
संरक्षण भवन, 10, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-110066
फोन :+91–11–26198856 ई-मेल : pcra@pcra.org Website : www.pcra.org

1041.2013

युवा वर्ग राजनीति में अलग और सबसे महत्वपूर्ण

श्वेता श्री
(लेखिका - फेम इंडिया की मैनेजिंग एडिटर है)

हमारे देश में युवा-वर्ग का अनुपात किसी भी दूसरे देश से ज्यादा है, लेकिन उनके विचार, रुझान और पसंद-नापसंद समाज की अन्य पीढ़ियों से अलग है। युवाओं को एक अलग वर्ग के रूप में देखा जाता है. इसके कुछ कारण माने जाते हैं।

पहला कारण ये है कि हम राजनीति के सिद्धांत पश्चिम से उधार लेते हैं जहाँ पीढ़ियों का भेद राजनीति में ज्यादा महत्वपूर्ण कारक है।

दूसरी वजह ये कि युवा वर्ग की छवि कहीं न कहीं महानगरों में बसने वाले अंग्रेज़ी बोलने वाले युवाओं से बना लेते हैं। हम अक्सर उन्हें ही युवा वर्ग का प्रतीक मान लेते हैं, जबकि हक़ीक़त में वे हमारे युवा वर्ग का एक बहुत छोटा हिस्सा हैं।

तीसरा कारण ये कि परिवर्तन, क्रांति और बदलाव की राजनीति ने युवाओं से जो उम्मीदें बांधी थीं उसका अंश आज भी कहीं ना कहीं हमारी राजनीतिक समझदारी में क़ायम है।

हक़ीक़त ये है कि युवा-वर्ग राजनीति में हिस्सेदारी के लिहाज़ से बुजुर्गों या अन्य किसी पीढ़ी से बहुत अलग नहीं है। अगर अलग है तो इस मायने में कि उसकी भागीदारी दूसरे वर्ग से कम है क्योंकि उसे शिक्षा और रोज़गार की चिंता ज्यादा रहती हैं।

मतदान या राजनीतिक पसंद के लिहाज़ से युवाओं और बाक़ी पीढ़ियों के वोट में कहीं भी बुनियादी मायने में अंतर नहीं है। अगर अंतर है तो सिर्फ़ इस मायने में कि जो पार्टियां पिछले 25-30 साल में आयी हैं, उनके बारे में युवाओं ने ज़्यादा सुना होता है, इसलिए उनकी पसंद ये पार्टियां कुछ ज़्यादा होती हैं। पूरे देश भर में किसी एक पार्टी को युवाओं का ज़्यादा समर्थन नहीं मिलता। सबसे हैरानी की बात है कि हिंदुस्तान में युवा वर्ग किसी भी मायने में एक विचार का वाहक नहीं हैं।

प्रश्न चाहे बदलाव का हो या समता का, चाहे परंपरागत बेड़ियों-बंदिशों की बात हो या शादी में आजादी का सवाल, युवा-वर्ग में इन सब के जवाब बुनियादी तौर पर अन्य पीढ़ियों से अलग हैं। गहराई से सोचें तो इसमें हैरानी की बात नहीं है। युवा अलग तब होते हैं जब उस युग में बदलाव की राजनीति का बोलबाला हो, जैसे 50 के दशक में था। तब युवा बाकियों से जरा हट के थे। जिस समाज में बदलाव की राजनीति अपने आप हाशिये पर खिसक जाती है उसमें युवा और दूसरी पीढ़ियों में कोई अंतर नहीं रहता।

जरुरत है युवाओं के सक्रिय राजनीतिक सहभागिता की। यही देश और समाज के पुरानी संकीर्णता को खत्म कर एक उज्जवल भारत के निर्माण को साकार कर सकता है।

रुडयार्ड किपलिंग ने
उन्हें अपनी कल्पनाओं
में बसाया और अब हम
उन्हें बसा रहे हैं,
एक नए परिवेश में।

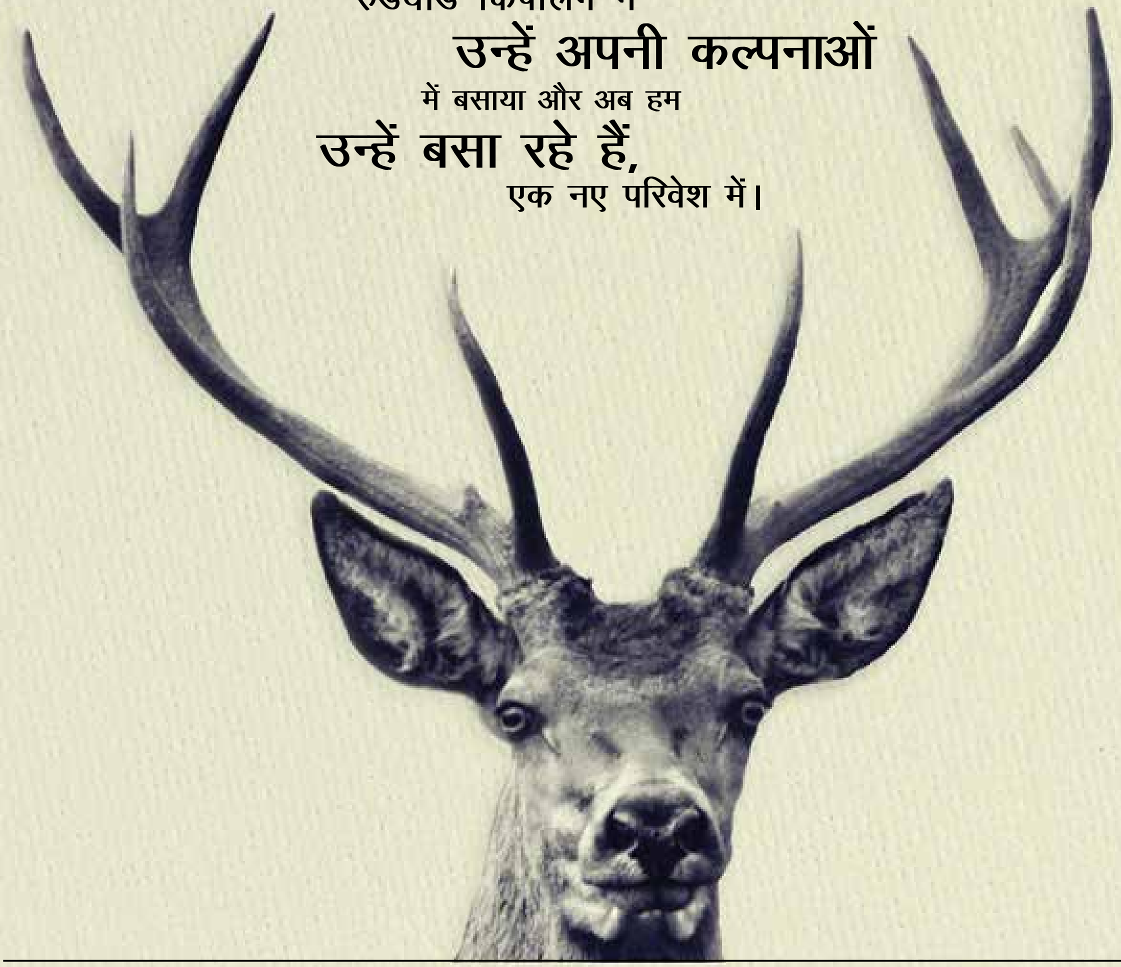

"ओएनजीसी बारासिंघा (ईस्टर्न स्वैम्प डीअर) संरक्षण परियोजना"

एक दुर्लभ प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये ओएनजीसी की सीएसआर पहल।

असम में पाये जाने वाले बारासिंघा या ईस्टर्न स्वैम्प डीअर *(Rucervus duvaucelii ranjitsinhi)* आज विलुप्त होने की कगार पर है। प्रसिद्ध लेखक रुडयार्ड किपलिंग ने जिस से मंत्रमुग्ध हो कर उसकी सुन्दरता को अपनी दूसरी किताब 'द सेकंड जंगल बुक' में कैद किया हो, उस जीव के लिये यह काफी दुखद स्थिति है।

ओएनजीसी ने इस प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये अपने कदम बढ़ाये, और वो भी बिल्कुल सही समय पर।

इसके पहले चरण के अन्तर्गत इनकी अनुमानित आबादी, अनुकूल पर्यावरण, पशु–चिकित्सा अंतःक्षेप एवं सामान्य अध्ययन और जागरूकता अभियान किया गया। इनके स्थानांतरण के लिये मानस राष्ट्रीय उद्यान को चुना गया, जो इनके रहने के लिये बिल्कुल उपयुक्त स्थान था।

काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान से 19 बारासिंघो को मानस में स्थानांतरित करना बहुत ही कठिन काम था। योजना के इस अत्यंत कठिन दूसरे चरण को दक्षिण अफ्रीका से बुलाये गये वन्यजीव विशेषज्ञों ने बहुत खास तरीके से अंजाम दिया। 19 बारासिंघो का स्थानांतरण खास तंबुओ में किया गया, जिनको अन्दर से उनके प्राकृतिक आवास जैसा ही बनाया गया था। कुछ ही महीनों में 6 नवजात बारासिंघो ने झुण्ड में जुड़कर, स्थानांतरण की खुशी को दुगना कर दिया।

इस योजना के विस्तार के तीसरे चरण के अन्तर्गत 20 अतिरिक्त बारासिंघो का स्थानांतरण किया जा रहा है।

यह परियोजना संतुलित पर्यावरण की ओर ओएनजीसी की एक शुरुआत है। लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण करने के लिये प्रेरित, हमारा संगठन प्रकृति की असली सुंदरता को बनाये रखने के लिये प्रतिबद्ध है।

ओएनजीसी
ONGC

ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालयः– पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऊर्जा भवन, 5, नैलसन मंण्डेला मार्ग, वंसत कुँज, नई दिल्ली-110070
दूरभाषः 011-26752021, 26122148, फैक्सः 011-26129091 www.ongcindia.com /ONGC Limited @ONGC_

Energy Solutions for the Nation

At IndianOil, we are committed to offering tailor-made energy solutions for our billion-plus customers by deploying product and process innovations, technology and service interventions, and focussed R&D.

Backed by the core values of *Care, Innovation, Passion* and *Trust*, we are constantly on the quest for new and smarter ways to fuel the nation's growth.

We welcome 2019 as the YEAR OF SOLUTIONS, as a year-long reminder to keep this spirit of quest alive.

इंडियनऑयल

IndianOil

2019

YEAR OF SOLUTIONS

Complexities Simplified